मई+जून-२०२० ◆ वर्ष ९ ◆ अंक ०१-०२ ◆ उदयपुर
ओ३म्
सत्यार्थ सौरभ
मासिक
मई+जून-२०२०
माता के पश्चात् पिता ही
गुरु दूसरा कहलाता
कर्तव्य कर्म पिता के सारे
सत्यार्थ प्रकाश है बतलाता।
शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)
₹ १०
१०२-३

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1000
आजीवन	1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	400 रु.	$ 100
वार्षिक	100 रु.	$ 25
एक प्रति	10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२१
आषाढ़ कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत् २०७७
दयानन्दाब्द १९६

May+June - 2020

क्या अग्निहोत्र वेदमंत्रों से ही करना अनिवार्य है?

२०

फादर्स डे

पिता एक रिश्ता है तो जिम्मेदारी का नाम भी

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २८

हलचल २९

स्वामी — श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ९ | अंक - ०१ - ०२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

क्षमा की सीमा

गतांक से आगे ....

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्व० ३/३०/१

परन्तु इस मार्ग से भिन्न एक और मार्ग भी है। मैं उसे 'मध्यम मार्ग' के नाम से पुकारता हूँ। जिन्होंने आध्यात्मिक उन्नति के द्वारा अपना भावात्मक परिष्कार किया हैं, वे इसी मार्ग को अपनाते हैं। इस मार्ग की भी कुछ पगडण्डियाँ हैं।

जब किसी व्यक्ति की किसी से अर्थ-हानि अथवा मान-हानि हो जाती है तो वह मध्यम मार्ग की पहली पगडण्डी यह अपनाता है कि उस भाव को मन में रख लेता है। वह किसी से इसका वर्णन नहीं करता। यह गम्भीरता की मानो पराकाष्ठा होती है। ऐसा गम्भीर एवं आध्यात्मिक व्यक्ति निकृष्ट मार्ग को न अपनाकर मध्यम मार्ग की पगडण्डियों को अपनाता है। ऐसा गम्भीर व्यक्ति मन में बात रख लेता है। यह उसका किसी के आगे प्रदर्शन नहीं करता। वह व्यक्ति-व्यक्ति को अपनी दुःख-भरी कथा-गाथा नहीं सुनाता।

यदि वह व्यक्ति मिल जाए तो वह उसे कह देता है कि तुमने मेरे साथ अच्छा नहीं किया। वह अपना गिला और उलाहना उसे दे देता है। यदि अपराध कुछ अधिक हुआ तो वह कुछ कठोर शब्दों को अपनाकर अपना गिला-शिकवा प्रकट कर देता है। यदि उस व्यक्ति में श्रेष्ठता होती है तो वह अपनी त्रुटि स्वीकार कर लेता है। यदि वह अपनी त्रुटि स्वीकार कर लेता है तो ठीक है, अन्यथा दूसरे व्यक्ति के मन का बोझ हल्का हो ही जाता है। मन के बोझ का हल्का होना ही अपने-आप में एक उपलब्धि है, क्योंकि वह निकृष्ट मार्ग पर चलने से बच जाता है। इसके पश्चात् आध्यात्मिक व्यक्ति को उस व्यक्ति के प्रति कोई दुर्भाव नहीं रखना चाहिए। यदि अपराध कुछ अधिक हो तो किसी के द्वारा रोष प्रकट कर देना चाहिए। किसी व्यक्ति के द्वारा रोष-सन्देश भेजने पर यदि वह व्यक्ति आकर अनुनय-विनय कर ले और अपना अपराध स्वीकार करे तो उसकी श्रेष्ठता है इसके पश्चात् उसके लिए मन में कोई दुर्भाव नहीं रखना चाहिए। यदि वह आकर अनुनय-विनय न करे और खेद प्रकट न करे तो यह उसकी निकृष्टता है।

यदि ऐसा व्यक्ति अनुनय-विनय नहीं करता तो फिर इस प्रकार के व्यक्ति से नमो-नमस्ते का सम्बन्ध तोड़ देना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ बोल-चाल भी बन्द कर देनी चाहिए। नमो-नमस्ते का सम्बन्ध और वार्तालाप के तोड़ने के पीछे अभिप्राय केवल सुधार का होना चाहिए।

ये मध्यम मार्ग की पगडण्डियाँ हैं। ये उपाय भी सांसारिकता और दुनियादारी के नाते ही हैं और इनको अपनाए बिना भी कार्य नहीं चलता, क्योंकि यदि ये उपाय न अपनाए जाएँ तो उच्छृङ्खल व्यक्तियों की उच्छृङ्खलता तो और भी बढ़ जाए। आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत व्यक्ति यही पगडण्डियाँ अपनाते हैं, परन्तु इससे भी ऊँचा एक और मार्ग है। उसे 'उत्तम मार्ग' कहना चाहिए। यह महापुरुषों का मार्ग है। यह तो प्रश्न ही नहीं उठता की महापुरुष निकृष्ट मार्ग की पगडण्डियाँ भी नहीं अपनाते। वे इन दोनों मार्गों से परे एक अन्य मार्ग का अनुसरण करते हैं जिसका अनुसरण केवल वही कर सकते हैं।

बस, उनका केवल एक ही मार्ग होता है- भूल जाना। वे दूसरे के किए अपकार का स्मरण ही नहीं करते। वे उसे भूल जाते हैं। उनके मस्तिष्क पर उनके किये हुए दुष्कृत्य का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। उन्हें यह स्मरण ही नहीं रहता कि उनके साथ किसी ने दुर्व्यवहार किया है, किसी ने उनकी मान-हानि अथवा अर्थ-हानि की है। यही महापुरुषों का महापुरुषत्व होता है। वे महापुरुष प्रथम मार्ग और द्वितीय मार्ग की पगडण्डियों को नहीं अपनाते। सामान्य व्यक्तियों की तो यही स्थिति होती है-

कहने को तो कहता हूँ कोई गैर नहीं है।
पर दिल से मेरे अपना-पराया नहीं जाता।।

परन्तु महापुरुषों की स्थिति इसके सर्वथा विपरीत होती है-

करूँ मैं दुश्मनी किससे कि जब दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने जगह छोड़ी नहीं दिल में अदावत की।।

वे अपने शत्रुओं को भी अपना समझते हैं। उनकी दृष्टि में अपने पराये का कोई अन्तर नहीं रहता। सामान्य व्यक्ति का वहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन है। इसके लिए अभ्यास की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

इसी उस स्थिति की आकांक्षा करने वाले व्यक्ति की इच्छा को कवि ने सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्ति दी है-

वो कलेजा राम को जो दिया, वो जिगर जो बुद्ध को अता किया।
वो फ़राख़ दिल दयानन्द का, घड़ी भर मुझे भी उधार दे।।

इसी सन्दर्भ में महापुरुषों के उदाहरणों से पता चलता है कि उन्होंने द्वेष-भाव को किस प्रकार से जीत रखा था। उनका व्यवहार अपने विरोधियों के प्रति कैसा था।

मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज को विमाता कैकेयी के कारण वनवास मिला। विधि की विडम्बना देखिए कि जिन्हें कल राजा बनना था, उन्हें भिखारी बनना पड़ा। साम्यावस्था को धारण करने वाले व्यक्ति ने वनवास को भी वरदान समझकर स्वीकार कर लिया। इससे भी बड़ी बात है कि उन्होंने कैकेयी के विरुद्ध कोई दुर्भाव मन में नहीं रखा। उसके विषय में कोई अपशब्द मुँह से नहीं निकाला। अविद्वेष की यह चरमसीमा है। यही महापुरुषों का महापुरुषत्व है। जिसके कारण महलों में पले एक राजकुमार को चौदह वर्ष तक जंगल की यातनाएँ सहन करनी पड़ीं, अनेक कष्ट उठाने पड़े, पत्नी को हाथ से खोना पड़ा, भयंकर युद्ध करना पड़ा- कितने घोर दुःख सहने पड़े! परन्तु उस महापुरुष के मुख से कैकेयी के प्रति कोई अपशब्द नहीं निकला। यह बड़े धैर्य और आत्मविजय का लक्षण है।

स्वामी शंकराचार्य जी भारतवर्ष के एक महापुरुष हुए हैं। उन जैसा मिश्नरी आज तक ईसाइयत ने भी उत्पन्न नहीं किया। शंकर ने **'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः'** के सिद्धान्त का प्रचार करते हुए बौद्ध और जैन मत की धज्जियाँ उड़ा दीं। आचार्य शंकर को कश्मीर में विष देकर मार डाला गया। यदि शंकर जीवित रह जाते तो मुझे एक बात का निश्चय है कि वे कभी भी यह न कहते कि मेरे विषदाताओं को कोई दण्ड दिया जाए। यही महापुरुष का महापुरुषत्व होता है।

उन्नीसवीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज अविद्वेष, उदारता और क्षमाशीलता की साक्षात् मूर्त्ति थे। उनके जीवन में अनेक घटनाएँ आती हैं, जो उनके इन गुणों को सिद्ध करती हैं।

काशी-शास्त्रार्थ की समाप्ति पर महर्षि दयानन्द जी महाराज का घोर अपमान हुआ। उन पर ईंट, गोबर, पत्थर और जूते फेंके गये। उन्हें अनेक अपशब्द कहे गये। पण्डित ईश्वरसिंह के नाम के एक निर्मले सन्त काशी में वास करते थे। उन्होंने आनन्दोद्यान से लौटते हुए जनसमुदाय को कुवचन बोलते हुए देखा। उनके मन में इच्छा हुई कि चलो, इस समय चलकर दयानन्द की दशा देखें। यदि इस महान् अनादर से उनका चित्त विचलित न हुआ तो समझेंगे कि वह सच्चा ब्रह्मज्ञानी और एक पहुँचा हुआ महात्मा है।

यह विचार लेकर सन्त ईश्वरसिंह आनन्दोद्यान में पहुँचे। ईश्वरसिंह जी को आते देख ऋषि दयानन्द जी मुस्कराये और उनका बड़े आदर से स्वागत किया। दोनों मिलकर बहुत समय तक आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में बातचीत करते रहे। इतनी लम्बी बातचीत में ईश्वरसिंह को स्वामी जी के मुखमण्डल पर उदासीनता का एक भी धब्बा दिखाई न दिया। उनकी मुस्कराहट की चन्द्रछटा में किंचित्मात्र भी न्यूनता न आई। उनके हृदय से दुःख और विषाद का एक भी श्वास न निकला। उन्होंने लोगों के

अन्याय एवं अत्याचार की कोई चर्चा नहीं की।
पण्डित ईश्वरसिंह ने जब यह देखा कि इतने घोर अपमान और निष्ठुर अन्याय के पश्चात् भी ऋषि दयानन्द जी ने मुँह से एक भी अपमानजनक शब्द नहीं निकाला तो उन्होंने ऋषि दयानन्द जी के चरण छूकर कहा, 'महाराज! आज तक मैं आपको वेदशास्त्र का ज्ञाता एक पण्डितमात्र समझता रहा हूँ, परन्तु आज पण्डितों के घृणित उत्पात से और विरोध की भयंकर आँधी से आपके हृदय-सागर में राग-द्वेष की एक भी लहर उठते न देखकर मुझे पूर्ण निश्चय हो गया है कि आप वीतराग महात्मा और सिद्ध पुरुष हैं।' यह कहकर सन्त ईश्वरसिंह वहाँ से विदा हो गये।
उपर्युक्त घटना सिद्ध करती है कि महर्षि दयानन्द में द्वेष का सर्वथा अभाव था। उनकी मानसिक भावभूमि उच्चकोटि की थी। उनके जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ घटीं जिनसे इस तथ्य की पुष्टि होती है। इस प्रसंग में एक घटना प्रस्तुत की जाती है-
गंगा मन्दिर के पुजारियों को लोग गंगा-पुत्र कहते हैं। एक गंगा-पुत्र स्वामी जी के समीप रहता था। उसका प्रातःकाल के नैत्यिक कर्मों में यह भी कर्म था कि वह स्वामीजी से थोड़ी दूर खड़ा होकर नित्य नियमपूर्वक उन्हें गालियाँ सुनाया करता था। उसका यह पामरपन बीसियों दिन तक निरन्तर होता रहा, परन्तु महर्षि ने उस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।
श्री स्वामी जी महाराज के पास नित्य अनेक भक्तजन आया करते थे। उनमें से कोई लड्डू भेंट करता, कोई पेड़े चढ़ा जाता और कोई बादाम-मिश्री आदि भोज्य पदार्थ अर्पण कर जाता था। स्वामी जी महाराज ये सब पदार्थ अपने सत्संगियों में प्रसादरूप में वितरण कर दिया करते थे। एक दिन सायंकाल को कुछ लड्डू-पेड़े पड़े रह गये। महाराज यह सोच ही रहे थे कि ये उत्तम पदार्थ किसे दे दें कि इतने में उन्होंने देखा कि वही गाली प्रदान करने वाला गंगा-पुत्र सामने से आ रहा है। उन्होंने उसे आदर से अपने समीप बुलाकर प्रेमपूर्वक वे सभी पदार्थ उसे दे दिये और साथ ही कहा कि 'सायं समय नित्य ही हमारे पास आया करो। हम तुम्हें बहुत-सी खाद्य वस्तुएँ दिया करेंगे।'
जब छः-सात दिन तक वह गंगा-पुत्र स्वामीजी से मिठाइयाँ प्राप्त करता रहा और महाराज ने उसकी गन्दी गालियों की बात एक बार भी न चलाई तो पश्चाताप के कारण उसका चित्त उसे भीतर-ही-भीतर कचोटने लगा। अन्त में वह महाराज के चरणों में आ पड़ा और आँसू भरकर कहने लगा, 'भगवन्! यदि मेरी कठोरता का कोई पार नहीं तो आपकी सहनशीलता भी अपार है। आपके सज्जनता ने मेरी दुर्जनता को जीत लिया है। कृपया मेरे पिछले सभी अपराध क्षमा करें।' महाराज ने उसे आश्वासन और आशीर्वाद देते हुए कहा, 'हमने आपके वचनों को स्मृति में स्थान नहीं दिया है। आप भी उन गई बीती-बातों को स्मरण न कीजिए।'

द्वेष के अभाव की एक और घटना इसी सन्दर्भ में उपस्थित की जाती है-
पूना में ऋषिवर दयानन्द जी महाराज के चव्वन व्याख्यान बड़ी धूमधाम से हुए। जब उनका अन्तिम व्याख्यान समाप्त हुआ तो महाराज के गले में पुष्पमाला पहनाई गई। एक पालकी में वेद रखे गये और स्वामीजी को हाथी पर आरुढ़ होने के लिए कहा गया, परन्तु स्वामीजी भक्तजनों के साथ पैदल ही चले। एक भारी समारोह के साथ शोभा-यात्रा निकाली। उधर पूना नगर में कुछ उपद्रव-प्रिय लोगों ने गर्दभानन्द आचार्य की सवारी लिकाली। जैसे-जैसे नगर कीर्तन आगे बढ़ता था वे लोग भी कलह और कोलाहल की मात्रा बढ़ाते जाते थे, असंख्य अण्ड-बाण्ड बातें बकते थे। कई सभ्य पुरुष उनको धिक्कारते थे, परन्तु वे टलनेवाले नहीं थे। उपद्रवियों ने स्वामी जी पर कीचड़ फेंकी, ईंट और पत्थर बरसाये। पामर पुरुष अपमान करते, अपशब्द कहते, कीचड़ फेंकते और विविध प्रकार से अवहेलना करते थे, परन्तु स्वामीजी हँस रहे थे। उनके मुखमण्डल की आभा में कोई कमी नहीं आई। उनको कुछ भी रोष नहीं आया। यह आध्यात्मिकता और स्थितप्रज्ञता की पराकाष्ठा थी। यही सर्वोच्च भावभूमि है। **क्रमशः ......**

अग्नि परमेश्वर के लिए, जल और पवन की शुद्धि वा ईश्वर की आज्ञा पालन के अर्थ होत्र जो हवन अर्थात् दान करते हैं उसे अग्निहोत्र कहते हैं (पंचमहायज्ञविधि)

इस विकट कोरोना काल में आर्यसमाज की शीर्षस्थ सभा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' (दोनों पक्ष) के आह्वान पर ३ मई २०२० को प्रातः साढ़े ६ बजे पूरे विश्व में लाखों आर्यजनों ने अपने-अपने स्थान पर अग्निहोत्र का सम्पादन किया। यूँ तो प्रत्येक आर्य भाई-बहिन अपने घर में प्रतिदिन यज्ञ करते ही होंगे, पर एक ही समय पर पूरे विश्व में इस पवित्र कार्य का सम्पादन हमारी संगठन शक्ति को प्रदर्शित करता है। सबसे बड़ी बात, यह कैसे संभव हुआ मुझे पता नहीं, परन्तु सार्वदेशिक के दोनों पक्ष इसमें पूर्णतः मन से एक साथ थे। कोई होड़ नहीं, कोई स्पर्धा नहीं, सकारात्मकता से परिपूर्ण इस दिव्य परिवेश का हम पूरी तरह आनन्द लेना चाह रहे थे, पर यह सम्भव न हो सका। सोशल मीडिया पर कुछ वीडियो उपलब्ध हुए जिसमें देश विदेश के प्रमुख आर्य पदाधिकारियों के और आर्यसमाज से जुड़े गणमान्य लोगों द्वारा अग्निहोत्र को सम्पादित करते हुए वीडियो क्लिप के साथ यज्ञ की महत्ता को स्थापित करते हुए उनके उद्बोधन सम्मिलित थे। इन वीडियोज, जिनमें उपलब्ध उद्बोधन केवल आर्यसमाज की उच्चतम हस्तियों तक सीमित थे, में किसी के द्वारा यज्ञ सामग्री में प्याज डालने का सुझाव और किसी का धूप आदि जलाने के सुझाव, यह सोच कर डरा देने वाला था कि सिद्धान्तों के सन्दर्भ इन उच्चतम प्रमुखों की स्थिति क्या है। पर आर्य समाज में सैद्धान्तिक स्खलन का जो हाल है उस पर फिर कभी चर्चा करेंगे। अभी अपनी बात अग्निहोत्र तक सीमित रखेंगे। इसी वीडियो में आर्य जगत् की एक जानी मानी हस्ती का भी उद्बोधन था जिसमें उन्होंने यज्ञ की प्रक्रिया के बारे में भी कतिपय परिवर्तन के सुझाव दिए थे जिनमें दो बिन्दु महत्वपूर्ण थे -

१. घर के सदस्यों व सेवकों के नाम से आहुति दे सकते हैं वा देनी चाहये।
२. जो अन्य मतस्थ जन हैं वे वेदमंत्रों से आहुति न देकर, अल्लाह नमः, मोहम्मदाय नमः अथवा माता मरियमाय नमः आदि बोलकर आहुति दें ताकि पूरे विश्व में सभी लोग यज्ञ (अग्निहोत्र) कर सकें और इस प्रकार कोरोना में लड़ने में व्यापक सहभागिता हो सके।

एक, अन्य वीडियो विदेशस्थ, उच्च स्तरीय पुरोहित जी द्वारा किये अग्निहोत्र का है, वे एक दीपक में एक कटोरी से घृत की आहुति दे रहे हैं। मन्त्र है- 'ओम कोरोनाय भस्मसात् कुरु' स्पष्ट है कि यह मन्त्र उनका स्वयं का बनाया है और इसके विनियोग का विधान कल्पकार ऋषि के रूप में उन्हीं का है। दोनों वीडियोज में अन्तर्निहित रूप से अग्निहोत्र के लाभों तथा विधि का प्रश्न उपस्थित है।

प्रथम प्रश्न तो यह है कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह आर्यसमाज अथवा समाज का कितना ही बड़ा विद्वान् या पदाधिकारी हो, क्या संस्कृत में, वह भी शुद्ध-अशुद्ध, कोई भी वाक्य बना उसका विधान और विनियोग अग्निहोत्र में कर सकता है? जैसे पंडित जी ने 'ओम् कोरोनाय भस्मसात कुरु' बनाया और अन्य माननीय ने अपने घर के सदस्यों और घर के सेवकों के नाम से बनाए होंगे। उदाहरण के तौर पर उनके घर पर कार्य करने वाले सहायक का नाम लक्ष्मण है तो 'ओम् लक्ष्मणाय स्वाहा' से आहुति उन्होंने दी होगी। इस सन्दर्भ में हमारा विचार तो यह है कि महर्षि प्रणीत यज्ञ पद्धति ही अनिवार्यतः अनुकरणीय है, (चाहे

यज्ञकर्त्ता आर्यसमाजी हो या गैर आर्यसमाजी अथवा अन्य मतावलम्बी), इसमें किसी को सन्देह है यह ही आश्चर्य की बात है। आप कहेंगे कि गायत्री परिवार तथा पौराणिक जगत् तो महर्षि प्रणीत पद्धति के अनुसार हवन नहीं करता, तो यह है तो दुर्भाग्य पर उन पर आर्यसमाज का क्या बस है? वे जो चाहेंगे करेंगे। हाँ उन्हें समझाने (शास्त्रार्थ) का प्रयास हमें करना चाहिए अन्यथा टुकुर-टुकुर देखने के अलावा हम क्या कर सकते हैं? इसी प्रकार सेमेटिक मजहबों के अनुयायी भी कल को **'ओम् मोहम्मदाय स्वाहा'**, **'मरियमाय स्वाहा'** से अग्निहोत्र करने लगें तो भी हम क्या कर पायेंगे? कुछ भी नहीं। आपत्ति तब है जब हम ऐसे सुझाव स्वयं देने लगें या ऐसी प्रक्रिया का समर्थन करें।

इस आलेख में हम किसी गंभीर शास्त्रीय चर्चा के स्थान पर मोटी-मोटी बातें ही लिखना चाहेंगे। यज्ञ पद्धति में कई विद्वान् अपनी मर्जी से कुछ वेदमंत्रों को बढ़ाकर अथवा घटाकर अथवा कुछ क्रम परिवर्तन कर जो प्रक्रिया अपनाते हैं वह भी उचित नहीं है। यहाँ तांत्रिक हवन की और रामायण की चौपाइयों के हवन का उल्लेख भी हुआ है, सो उसका समर्थन कौन कर सकता है? वस्तुतः मोटे रूप से देखा जाय तो सत्यार्थ प्रकाश में जहाँ, अग्निहोत्र का, ऋषि ने वर्णन किया है उसे ही ध्यान में रख लिया जावे तो समस्त शंकाओं का निवारण हो जाता है। वहाँ यह ध्यान रख लेना चाहिए कि ऋषि ने वायु, जल की शुद्धि से रोग निवारण और रोगों के नष्ट होने से सुख प्राप्ति को मुख्य उद्देश्य माना है।

अब प्रश्न यह है कि यदि यह कार्य केवल 'आग में घी, सामग्री' डालने से हो जाता होता तो-

१. महर्षि को एक निश्चित प्रक्रिया बनाने की क्या आवश्यकता थी? क्योंकि फिर यह कार्य तो नितान्त अनपढ़ और गंवार भी कर लेता। फिर यह समस्या भी न होती कि यदि यज्ञकर्त्ता (यजमान) मंत्रोच्चारण न कर सके तो क्या किया जाय और ऋषि को यह व्यवस्था न देनी पड़ती कि ऐसी स्थिति में मंत्रोच्चारण पुरोहित करे पर कर्म यजमान से कराये।

२. यज्ञकुण्ड व यज्ञपात्रों के निश्चित माप की क्या आवश्यकता थी? (यज्ञकुण्ड- ऊपर जितना चौड़ा हो उसका चतुर्थांश नीचे चौड़ा रहै)

३. समिधाएँ किन पेड़ों की हों निश्चित करने की क्या आवश्यकता थी?

४. सामग्री में किस ऋतु में क्या सामग्री हो इस सम्बन्ध में निर्देश देने की क्या आवश्यकता थी? और क्यों चार प्रकार के पदार्थ ही हवनीय हैं?

५. घी व सामग्री का परिमाण निश्चित करने की क्या आवश्यकता थी? न्यूनतम परिमाण क्यों निर्धारित किया?

६. अग्न्याधान की विधि सुनिश्चित करने की

७. प्रातः सायं दोनों समय निश्चित निर्धारित समय पर ही यज्ञ करने की व्यवस्था करने की क्या आवश्यकता थी? क्या सूर्योदय के पूर्व और सूर्योदय के पश्चात् किया यज्ञ वायु-जल की शुद्धि नहीं करेगा?

८. यज्ञपात्रों का सुनिश्चित आकार (उनका चित्र तक देकर कि ऐसे ही ये पात्र बनें) निर्धारित करने की क्या आवश्यकता थी?

९. ये पात्र सोने, चाँदी वा काष्ठ (आदि) के हों, इस निर्देश की क्या आवश्यकता थी?

१०. यज्ञोपवीतधारी को ही यज्ञाधिकार क्यों दिया?

११. यजमान पूर्व दिशा में मुख करके क्यों बैठे? इसका शुद्धि से क्या लेना देना है?

१२. यहाँ तक कि यज्ञ के लिए विहित आहुतियाँ समाप्त हो जायँ और यजमान ज्यादा आहुति देना चाहता हो तो 'विश्वानि देव ..... और गायत्री मन्त्र से आहुति दें' यह विधान क्यों दिया? अरे लिख देते कि जिस वेदमंत्र से चाहें उनसे आहुति दे दें।

१३. पंचमहायज्ञ विधि में 'सूर्यो ज्योति .... आदि मन्त्रों' का विधान कर ऋषि लिखते है- **'एते चत्वारोमंत्राः प्रातःकालस्य सन्तीति बोध्यम्'** तथा अग्निः ज्योति आदि चार मन्त्र लिख कहते हैं- **'एते सायंकालस्य मंत्राः सन्तीति वेदतव्यम्'**। ऐसा क्यों? अगर वेदमन्त्रों का यज्ञ में बोलने का अभिप्राय केवल उनकी रक्षा करना है तो कोई मन्त्र कभी बोल लो। कंठस्थ भी हो जायेंगे और वेद-रक्षा भी हो जायेगी।

वेदमंत्रों के यज्ञ में विनियोग पर पंडित मदन मोहन जी ने ऋषि के भावों को प्रकट करते हुए संस्कार समुच्चय में लिखा है- 'इसलिए यज्ञ सब उत्तम मांगलिक कर्म वेद मन्त्रों से ही करने चाहिए क्योंकि वेदमंत्रों में ही ऐसी विद्या है जो मनुष्य को सच्चे अर्थों में सुसंस्कृत-सच्चरित्र बनने का बोध कराती है।

अब इस पर भी देख लिया जाय कि क्या किन्हीं भी वेदमंत्रों से आहुति दे दी जाय? हमें नकारात्मक उत्तर मिलता है। इसमें हमें ऋषि ने कदापि स्वतंत्रता प्रदान नहीं की है। ऋषि को यह अभिप्रेत ही न था। बात अगर केवल वेदमंत्रों से आहुति की होती तो दैनिक यज्ञ के लिए कुछ विशिष्ट वेदमंत्रों के समुच्चय व भिन्न-भिन्न संस्कारों के लिए पृथक्-पृथक् वेदमंत्रों के विनियोग की क्या आवश्यकता थी? सब कुछ इतना क्लिष्ट (कुछ की दृष्टि में) क्यों कर दिया कि यज्ञ करवाने हेतु विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ जाय। जैसा एक विद्वान् ने लिखा कि ..... (प्रस्तावित) मार्ग से संसार का हर व्यक्ति यज्ञ कर सकता है और इसे अपनाना इसलिए चाहिए कि आर्यसमाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है, न कि 'आर्यसमाज के मुट्ठीभर ठेकेदारों' का उपकार करना। तो यहाँ विचार यह करना है कि आर्यसमाज का यह उद्देश्य तो स्वयं ऋषि ने निर्धारित किया था। जिस कर्तव्य-आचरण संहिता का सृजन उन्होंने अपनी ग्रंथत्रयी के माध्यम से किया था, उसे उन्होंने 'आर्यसमाज के मुट्ठीभर ठेकेदारों' के लिए नहीं वरन् मानवमात्र के लिए बनाया था, वे यह बात भली भाँति जानते थे। फिर उन्होंने स्वयं ही 'इष्टदेव का स्मरण कर आहुति देवें' यह विधान क्यों नहीं बना दिया? क्या वे अन्य मताबलम्बियों का उपकार नहीं करना चाहते थे?

इसी बात को और स्पष्ट करने के लिए संस्कारविधि का निम्न उद्धरण देखें- 'मनुष्यों को योग्य है कि सब मंगल कार्यों में अपने और पराये कल्याण के लिए यज्ञ द्वारा ईश्वरोपासना करें। इस इष्टतम कर्म यज्ञ के विधिपूर्वक सम्पन्न करने के लिए जिन वस्तुओं की आवश्यकता होती है उनको आगे लिखते हैं।' इससे अधिक क्या स्पष्ट होगा कि ऋषि यज्ञविधान सब मनुष्यों के लिए कर रहे हैं फिर भी विधि पर जोर दे रहे हैं। क्यों, क्योंकि विधिपूर्वक यज्ञ से ही अभीष्ट की प्राप्ति हो सकती है। वे ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखते हैं- 'चारों का परस्पर शोधन, संस्कार और यथायोग्य मिलाके अग्नि में युक्तिपूर्वक जो होम किया जाता है, वह वायु और वृष्टिजल की शुद्धि करने वाला होता है।' (ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका)

पाठकगण! यदि गुटीय मानसिकता, पक्षपातजनित सोच तथा हठवादिता को त्याग कर उपरोक्त अनेक 'क्यों?' के उत्तर खोजने चलेंगे तो स्पष्ट होगा कि यज्ञ केवल अग्नि में घी सामग्री डाल देना मात्र नहीं है, न ही संस्कृत श्लोकों अथवा रामायण की चौपाइयों से आहुति देना यज्ञ है, न ही धूप बत्ती जलाना यज्ञ है, और न ही अपने मन से किन्हीं भी वेदमंत्रों से आहुति देना यज्ञ है बल्कि यज्ञ एक पूर्णतया वैज्ञानिक प्रक्रिया का नाम है, जिसे सम्पन्न करने में विधि तथा सामग्री आदि के क्रम में निर्धारित व्यवस्था का पूर्णतः अनुकरण आवश्यक है, चाहे यज्ञकर्ता कोई भी हो, भिन्न मत-मतान्तर वाला हो।

किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया में जिस प्रकार अभीष्ट की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिकों द्वारा विहित छोटे से छोटे निर्देश की अनुपालना (जैसे वायु दाब, नमी की मात्रा, निर्धारित तापमान, विहित उपकरण, और अन्य अनेक पैरामीटर) का कठोरता से पालन आवश्यक होता है। इसी प्रकार की स्थिति यज्ञ प्रक्रिया के साथ है। हमने एक खाद्य वैज्ञानिक के रूप ४० वर्ष कार्य किया है। अपने अनुभव से इस लिखे हुए की पुरजोर पुष्टि करते हैं। तापमान में आधा डिग्री का अन्तर आया-परिणाम भी अशुद्ध आया। आप जानते हैं कि हाइड्रोजन के दो अणु और ऑक्सीजन का एक अणु मिलकर पानी बनाते हैं। जाइए हाइड्रोजन में उससे आधी मात्रा में ऑक्सीजन मिला दीजिये-पानी त्रिकाल तक नहीं बनेगा। तो जिस प्रकार वैज्ञानिक परीक्षणों में निर्धारित निर्देशों से अणुमात्र विचलन हमें यथेष्ठ परिणाम से निश्चितरूपेण वंचित कर देता है, दूसरे शब्दों में जिन वैज्ञानिकों ने यह निर्माण विधि बनायी है पूर्ण सफलता हेतु उनके निर्देशों का अक्षरशः पालन आवश्यक है, उसी प्रकार यज्ञ के लाभ को प्राप्त करने के लिए, उसके निर्देशक ईश्वर के सान्निध्य में साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने यथेष्ठ परिणाम की प्राप्ति के लिए, कल्पकार के रूप में, जो छोटी से छोटी व्यवस्था भी निर्देशित की है उसका पालन अत्यावश्यक है। ये विनियोग ऋषि ही कर सकते हैं मनुष्य नहीं। यदि हम उनमें बदलाव करने के इच्छुक हैं तो अभिलषित परिणामों को भूलना होगा।

अब आते हैं दूसरी बात पर कि 'उन्होंने अपने घर के सदस्यों के नाम से अथवा सेवकों के नाम से आहुति दी।' इसका क्या प्रयोजन था? यह उन्होंने स्पष्ट नहीं किया। ध्वनित तो यह होता है कि उस आहुति का लाभ उस व्यक्ति को मिल जाय ऐसा उनका सोचना था अथवा उस व्यक्ति ने भी (अनुपस्थित रहने के बावजूद) यज्ञ कर लिया यह उनकी सोच रही हो। यह नितान्त उसी नवीन युग की सोच है जिसके चलते सद्बुद्धि यज्ञ आदि का प्रचलन शुरू हुआ है। अब तो क्रिकेट मैच जीतने के लिए यज्ञ होते हैं। अधिक क्या लिखें, यज्ञों के विभिन्न नामकरण बताते हैं कि ऋषि का यज्ञ का पूरा 'कान्सेप्ट' ही आर्यों ने विसरा दिया है।

हम सोदाहरण ऊपर लिख चुके हैं कि यज्ञ में वेदमन्त्रों की आहुति का ही विधान है। सामान्य यज्ञ में ऋषि ने जिन मन्त्रों का विनियोग किया है अगर उनके अर्थों पर दृष्टि भी डाल ली होती तो उक्त भूल कदापि नहीं होती। जो आहुतियाँ परमेश्वर के निमित्त हैं आप उन्हें सेवकों और घर वालों के निमित्त दे रहे हैं, इसे विडम्बना के अतिरिक्त क्या कहा जाय?

देखिये पंचमहायज्ञ विधि में प्रातःकालीन मन्त्रों में से एक **'सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः'** का अर्थ–

'(सूर्यो) यश्चराचरात्मा ज्योतिषां प्रकाशकानामपि ज्योतिः प्रकाशकः सर्वप्राणः परमेश्वरोऽस्ति, तस्मै स्वाहाऽर्थात् तदाज्ञापालनार्थं सर्वजगादुपकारायैकाहुतिं दद्मः।

(सारे मन्त्रों के अर्थ वहीं देख लें) सभी आहुतियाँ करुण

के सदस्यों एवं सेवकों के नाम की आहुतियों का औचित्य क्या है? कुछ भी नहीं-यह स्पष्ट है। महर्षि दयानन्द का तो यही कहना है कि ये सभी आहुतियाँ परमेश्वर की प्रसन्नता के लिए, उसके अनुग्रह के लिए, उसकी प्राप्ति के लिए, उसको समर्पित करनी है। अब जो कोई अपने सेवकों के लिए आहुति देना चाहता है वह इसका औचित्य स्वयं तय करें।

अब बात आती है कि मुस्लिम भाई **'ओं अल्लाहाय नमः, ओं मोहम्मदाय नमः** बोलकर तथा ईसाई माता **मरियमाय नमः'** आदि बोलकर आहुति दें अथवा जयपुर के एक आर्यनेता के सुझाव के अनुसार कुरआन की आयत से आहुति दें, तो कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, हेतु यह है कि यदि मुस्लिम तथा ईसाई वेदमन्त्र नहीं बोलना चाहें तो उक्त प्रकार से आहुति देकर पवित्र यज्ञ का लाभ प्राप्त कर सकते हैं तथा कोरोना काल में सब मिलकर सार्वजनीन स्वास्थ्य प्राप्ति में सहयोगी बन सकते हैं। इनकी भावना है कि ऐसा हो जाय तो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** के लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव है।

अब ऊपर दिए इनके सुझावों पर विचार करते हैं। जैसा हमने विस्तार से लिखा है कि महर्षि दयानन्द के अनुसार तो किसी लौकिक व्यक्ति विशेष के नाम से यज्ञाहुति नहीं दी जा सकती चाहे वह आर्य (हिन्दू) नाम हो अथवा मुहम्मद, मरियम आदि।

वस्तुतः जो बोला जाता है उसका उस प्रकरण में सार्थक होना आवश्यक है। सत्यार्थ भास्कर में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती लिखते हैं– 'शब्द का प्रयोजन किसी अर्थ का बोध कराना होता है। जिस शब्द से किसी अर्थ का बोध न हो वह निरर्थक अथवा व्यर्थ कहाता है। आचार शास्त्र में निरर्थक, अपार्थक अथवा व्यर्थ शब्दों के बोलने का निषेध है। अग्निहोत्र में वेदमंत्रों का पाठ किया जाता है। इनका अर्थ जानना तथा तदनुसार आचरण करना भी ऋषि के अनुसार आवश्यक है। अब आप देखें कि विभिन्न लौकिक पुरुषों वा स्त्रियों का नाम लेकर आहुति देने में क्या अर्थ है? सत्यार्थप्रकाश प्रथम संस्करण में महर्षि **'अग्नये स्वाहा'** आदि मंत्रों से आहुति देने के सन्दर्भ में लिखते हैं– 'और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो **'अग्नये स्वाहा'**, इसका अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देश्य से ही करना। **'इदमग्नये'** जो दूसरा पाठ है उसका अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर को जनाने के लिए है ...... **'इदं न मम'** यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत् है सो मेरा नहीं, किन्तु परमेश्वर की ही रचना है। (पृष्ठ ४६)

इस प्रकार स्पष्ट है कि यज्ञ में जितने मन्त्र बोले जाते हैं उनका सम्बन्ध परमात्मा से है। मोहम्मद या मरियम के नाम से यह आशय कैसे आएगा? विधर्मियों को भी लौकिक नामों से यज्ञ करने की प्रेरणा उन्हें सत्यमार्ग से दूर ले जाना है और हमारे विचार में प्रपंच मात्र है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में ऋषि वेद विषय विचार (पृष्ठ ५६) में स्पष्ट लिखते हैं कि वेदमंत्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं तथा रक्षा भी होती है और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक न हो जाय। (यहाँ जो अधिकारी मित्र, नास्तिकों के लिए यज्ञ पद्धति जानना चाहते हैं उनकी सेवा में निवेदन है कि ऋषि तो स्पष्ट कह रहे हैं कि वेदमंत्रों के विनियोग सहित जो यज्ञ हैं नास्तिक होने से बचाते हैं अर्थात् जो विधिपूर्वक यज्ञ करने वाला है वह नास्तिक नहीं हो

सकता और जो नास्तिक है वह यज्ञ करेगा क्यों?) ईश्वर की प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्मों का आरम्भ करना होता है, सो वेदमंत्रों के उच्चारण से यज्ञ में तो उसकी प्रार्थना सर्वत्र होती है। इसलिए सब उत्तम कर्म वेदमंत्र से ही करना उचित होता है।'

इसी प्रकरण में आगे कहा है- ...... यज्ञ में मन्त्र और परमेश्वर को ही देव मानते हैं।

.... परन्तु यज्ञ में तो वेदों के मंत्र और ईश्वर को ही देवता माना है।

जिज्ञासु जन इस पूरे प्रकरण को पढ़ेंगे तो हमें लगता है सर्व शंकाओं का समाधान हो जाएगा।

अब इनका सुझाव यह हो सकता है कि चलिए नाम से नहीं परन्तु उनके ईश्वर अर्थात् अल्लाह अथवा यहोवा (यहोवा उन्होंने कहा नहीं है) के नाम से तो दी जा सकती है? यद्यपि यह कुतर्क ही है पर इस पर भी अति संक्षेप में विचार कर लेते हैं क्योंकि ये भाषा का प्रश्न भी डालते रहे हैं कि वे संस्कृत नहीं जानते तो उर्दू अथवा अरबी में ईश्वर के नाम पर आहुति क्यों नहीं दे सकते?

भाषा के नाम पर तो हमें इतना ही कहना है कि वेद तथा वैदिक भाषा परमेश्वर प्रदत्त है अतः अग्निहोत्र वेदमंत्रों से किया जाता है (परमेश्वर की स्तुति उसी की भाषा में), जबकि उर्दू वा अरबी आदि मनुष्यकृत भाषाएँ हैं। जिस प्रकार हम संस्कृत वा हिन्दी में आहुति नहीं देते वही स्थिति अन्य लौकिक भाषाओं के सन्दर्भ में समझनी चाहिए। दूसरे क्या अल्लाह वा यहोवा वेद वर्णित परमेश्वर के ही नाम हैं? ईश्वर के जो गुण कर्म स्वभाव वस्तुतः हैं और ईश्वर होने के लिए आवश्यक हैं और वेद में निर्देशित हैं, वैसे ही क्या अल्लाह और यहोवा के हैं? यदि ऐसा हो तो कुछ विचार करने योग्य अवकाश मिल सकता है। यह निर्धारण करना इसलिए आवश्यक है कि जिन वेदमंत्रों से होम किया जा रहा है वे आहुतियाँ केवल परमेश्वर का नाम लेके नहीं दी जा रहीं वरन् उस मन्त्र में परमेश्वर के गुणों का वर्णन है। क्या कुरानोक्त अथवा बाइबल का ईश्वर वैसा ही है? जी बिलकुल नहीं। कोई समानता नहीं है।

अग्निहोत्र के केवल एक मन्त्र का उदाहरण यहाँ देंगे। **'सजूर्देवेन ....जुषाणः सूर्योवेतु स्वाहा।'** महर्षि दयानन्द ने उक्त मन्त्र के अर्थ में ईश्वर के अन्य गुणों के साथ निम्न गुण भी उल्लिखित किये हैं-

१. सब पर प्रीति करने वाला।

२. सबके अंग अंग में व्याप्त।

इन कसौटियों पर न तो अल्लाह और न यहोवा खरा उतरता है। हमें कोई व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के १३ व १४ समुल्लास स्पष्ट रूप से इस विषय में हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं। ये तथाकथित ईश्वर एकदेशी हैं अतः सर्वान्तर्यामी नहीं हो सकते, क्रोधादि अवगुणों से युक्त हैं, जीवमात्र पर दया के सन्दर्भ में बात करें वे जीवमात्र के प्रति प्रीति नहीं रखते। हम देखते हैं कि यहोवा स्वयं बलि देने की प्रेरणा करता है। केन और हाबील दोनों परमेश्वर को अपनी भेंट लाये। केन किसान था सो फल-सब्जी लाया तो दूसरी और हाबील भेड़ का बच्चा लाया। हाबिल की भेंट यहोवा ने स्वीकार की, केन के फलादि नहीं। अबरहाम को तो भेंट हेतु मारने के लिए पशु भी परमेश्वर ने उपलब्ध कराया। इस्राएलियों का भयंकर पक्षपात करते हुए मिश्र देश वासियों पर एक दो बार नहीं १० बार विपत्तियाँ भेजीं। अल्लाह का भी यही हाल है। जो उसको न माने उसके लिए आग तैयार की गयी है। ये दोनों एकदेशी हैं, अन्तर्यामी नहीं। अल्पज्ञ हैं, अन्यायकारी हैं, पक्षपाती हैं, आदि-आदि। अतः 'अल्लाह अथवा यहोवा **'सजूर्देवेन ....जुषाणः सूर्योवेतु स्वाहा'** में वर्णित ईश्वर के वाचक हैं ही नहीं। वस्तुतः ईश्वर इसका, उसका होता ही नहीं, वह तो सबका है और एक है। अतः यज्ञ में तो उसी परमेश्वर के निमित्त आहुति हो सकती है, अतएव **'अल्लाय स्वाहा वा यहोवाय स्वाहा** से आहुति नहीं दी जा सकती, कम से कम आर्यसमाज उसका प्रस्ताव व समर्थन नहीं कर सकता।

यज्ञ जैसे पवित्र कार्य को सम्पन्न करने हेतु व्यक्ति को तन-मन तथा आत्मा से पवित्र होना चाहिए। अतः हम मानते हैं कि शारीरिक शौच के साथ आहार तथा विचार की सात्विकता भी अपरिहार्य है। अतः मांस खाने वाला, व्यसनों से युक्त व्यक्ति याज्ञिक नहीं हो सकता, चाहे वह आर्यसमाजी भी क्यों न हो (यदि कोई है)

यजुर्वेद के तृतीय अध्याय में वे मंत्र हैं जो यज्ञ हेतु ऋषि ने निर्धारित किये हैं। परन्तु क्रमभेद ही नहीं, एक मन्त्र को कई टुकड़ों में तोड़कर मंत्रांशों, को विविध क्रम में ऋषि ने रखा है। इसका अधिकार ऋषिकोटि के व्यक्तित्व को ही हो सकता है। और हम साधारण अज्ञजन, ऋषि पद्धति को बदलने की सोचते हैं, यह दुर्भाग्य ही है।

इस प्रकरण में यजुर्वेद के तीसरे अध्याय के मन्त्र संख्या ११ के ऋषिकृत भाष्य को उद्धृत कर आलेख को विराम देंगे।

'मनुष्यों को वेदमंत्रों के साथ ईश्वर की स्तुति वा यज्ञ के अनुष्ठान को करके, जो ईश्वर भीतर बाहर सब जगह व्याप्त होकर सब व्यवहारों को सुनता व जानता हुआ वर्तमान है इस कारण उससे भय मानकर अधर्म करने की इच्छा भी न करनी चाहिए.......।' यहाँ यह तो विशेषरूप से लिखने की आवश्यकता नहीं है कि वेद की शिक्षाएँ 'मुठ्ठीभर आर्य समाजियों' के लिए नहीं, मानवमात्र के लिए हैं और महर्षि ने भी यहाँ मनुष्यों को ही सम्बोधित किया है अतः जो भी यज्ञ करे उसे वेदमंत्रों से ही करना होगा। उसे मन्त्र बोलने में असमर्थता हो तो किसी पुरोहित को बुलाले। यज्ञ की इच्छा रखने वाले मुस्लिम, ईसाई, व नास्तिकों के लिए यह व्यवस्था आर्यसमाज निःशुल्क कर देगा इसमें मुझे सन्देह नहीं। उन्हें कोई साधन नहीं जुटाने। बस वे बता दें कि उन्हें यज्ञ करना है। सब साधन आर्यसमाज मुहैया कराएगा। अन्त में एक विद्वान् ने जो लिखा है- 'वास्तव में ..... ने हवन के नए मार्ग को खोलकर दयानन्द के विचार को विश्व व्यापी रूप दे दिया है। उनके इस मौलिक अवदान के लिए आर्यसमाजियों को उनका आभारी होना चाहिए', क्षमा सहित निवेदन है कि हम इससे पूर्णतः असहमत हैं और पक्षपात रहित हो आप भी जब उक्त निवेदन पर विचार करेंगे तो हमसे सहमत होंगे। बड़े विनम्र भाव से हमने अपना निवेदन व्यक्त किया है, आशा है इसे अन्य भाव से नहीं लेंगे।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त **होगा।** राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य (मंत्री-न्यास) | भंवरलाल गर्ग (कार्यालय मंत्री) | डॉ.अमृत लाल तापड़िया (उपमंत्री-न्यास)

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

इस अंक में सत्यार्थप्रकाश पहेली नहीं दी जा रही है।

वेदों का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा से हुआ था। सृष्टि के आरम्भ में न कोई भाषा थी न ही ज्ञान। ज्ञान भाषा में ही निहित होता है। मनुष्यों की प्रथम उत्पत्ति से पूर्व भाषा व ज्ञान का होना असम्भव व अनावश्यक था। भाषा तो मनुष्यों की उत्पत्ति के बाद ही हो सकती थी। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों व अन्य प्राणियों की उत्पत्ति उसी अनादि, नित्य, चेतन, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान सत्ता से हुई जिसने कि इस सृष्टि वा समस्त ब्रह्माण्ड को सप्रयोजन बनाया था। ईश्वर का सृष्टि को बनाने का प्रयोजन अपनी अनादि प्रजा चेतन तथा अल्पज्ञ जीवों को उनके पूर्व कल्प के भोग करने से रह गये कर्मों का फल देना था। यदि वह ऐसा नहीं करता तो सभी जीव अन्धकार के आवरण में सदा-सदा के लिये ढके रहते। वह मनुष्य आदि जन्म लेकर सुख व दुःख की व आनन्दित होता है। अज्ञानी मनुष्य तो अपना जीवन भी भली प्रकार से व्यतीत नहीं कर पाता। जीवनयापन के लिये भी मनुष्य को ज्ञान चाहिये और इसके साथ कृषि, गोपालन, वस्त्र बनाने के कार्य तथा निवास के लिये कुटिया बनाने के लिये भी ज्ञान चाहिये। बिना ज्ञान के मनुष्य भाषा का प्रयोग भी ठीक प्रकार से नहीं कर पाता है। मनुष्य जीवन ज्ञान से ही चलता है। जो मनुष्य ज्ञानी होते हैं वह दूसरे चालाक व चतुर लोगों के अन्याय व शोषण से बच जाते हैं। जो ज्ञानी होते हैं वह अपने ज्ञान से अपने से कम ज्ञान वालों को वार्ता, संवाद, विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क आदि के द्वारा सत्य को स्वीकार कराने के लिये प्रयत्न व संघर्ष करते हैं। विजय उसी पक्ष की होती है जहाँ सत्य ज्ञान होता है और उसके लिये आवश्यक मात्रा व उससे अधिक पुरुषार्थ किया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ में जगत्कर्त्ता ईश्वर ने इस सृष्टि को

'वेदों को हानि उन ब्राह्मण पण्डितों से हुई जिन्होंने सत्य वेदार्थ का अनुसंधान एवं प्रचार नहीं किया'

अनुभूति न कर पाते। परमात्मा आनन्दस्वरूप है। उसे अपने लिये तो सुख व आनन्द की आवश्यकता किंचित भी नहीं है। सुख व आनन्द की आवश्यकता केवल जीव आत्माओं को हुआ करती है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिये तीन अनादि व नित्य सत्ताओं ईश्वर, जीव व प्रकृति में से ईश्वर ने जड़ गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति से इस कार्य जगत् अर्थात् पृथिवी, सूर्य, चन्द्र, ग्रह, उपग्रह एवं लोक-लोकान्तरों को बनाया है।

यह सुनिश्चित सिद्धान्त है कि ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सभी प्रकार के ज्ञान से युक्त है। मनुस्मृति में उसे सर्वज्ञानमय कहा है। चेतन सत्ता में आनन्द का मुख्य आधार ज्ञान ही होता है। जिस जीव व मनुष्य को ईश्वर, जीव व प्रकृति से सम्बन्धित जितना अधिक सद्ज्ञान होता है, वह उतना ही अधिक सुखी बनाकर इसमें वनस्पतियों सहित प्राणी जगत की उत्पत्ति की। संसार में जितने भी प्राणी पाये जाते हैं उन सबके शरीरों में एक चेतन जीवात्मा होता है जो ईश्वर की व्यवस्था से अपने पूर्वजन्मों के कर्मों का फल भोगने के लिये शरीर में आता व भेजा जाता है। मनुष्य योनि जीवात्मा को तभी मिलती है जब उसके पाप व पुण्यकर्मों के खाते में पुण्य अधिक तथा पाप कम हों। सृष्टि के आरम्भ में भी जिन मनुष्यों को जन्म दिया गया था वह कर्मानुसार ही दिया गया था। उनको भाषा व ज्ञान की आवश्यकता थी। सृष्टि में बच्चे वही भाषा जानते व सीखते हैं जो उनकी माता व पिता उन्हें सिखाते हैं। सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों के माता-पिता न होने से उनका जन्म व पालन पोषण परमात्मा व उसकी व्यवस्था से हुआ था। परमात्मा के सर्वज्ञानमय होने से उसकी

अपनी एक भाषा 'वैदिक संस्कृत' है। इसी भाषा में वह मनुष्यों को आवश्यक एवं हितकार ज्ञान देता है। इस ज्ञान को वेद कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने चार मनुष्य-ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान दिया था। वेदों का ज्ञान पूर्ण ज्ञान है। इसमें भाषा, गणित, विज्ञान, ईश्वर, जीव व प्रकृति के सत्यस्वरूप मनुष्यों के लिये करणीय पंचमहायज्ञों सहित सभी प्रकार का व्यवहारिक ज्ञान है।

ऋषि दयानन्द ने चारों वेदों की परीक्षा कर एवं अपने ऋषित्व एवं योग की सिद्धियों के आधार पर घोषणा की है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ऋषि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, इस सिद्धान्त को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। ऋषि दयानन्द के अनुयायी अनेक विद्वानों ने वेद के सर्वज्ञानमय होने के समर्थन में अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। इनसे भी वेदों की महत्ता का ज्ञान होता है। मत-मतान्तरों के ग्रन्थों के विषय में इस प्रकार के ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। सृष्टि के

आरम्भ से महाभारत युद्ध तक के १.९६ अरब वर्षों में वेद न केवल भारत में अपितु पूरे विश्व में प्रतिष्ठित थे। सारे संसार में धर्म व कर्म का आधार वेद ज्ञान अथवा भारत के वेदों के ज्ञानी ऋषियों के वचन ही हुआ करते थे।

महाभारत के बाद वेदों की अप्रवृत्ति से सारे संसार में अन्धकार फैल गया जिससे देश देशान्तर में अन्धकार को दूर करने के लिये वहां के लोगों ने अपनी अल्प मति के अनुसार अविद्यायुक्त मत-मतान्तरों का प्रचलन किया। ज्ञान की दृष्टि से सभी मत-मतान्तरों की पुस्तकें अपूर्ण हैं और इसके साथ ही उनमें अनेक अविद्या से युक्त बातें हैं। ऋषि दयानन्दने इसका दिग्दर्शन अपने विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में किया है। वेद, उपनिषद और दर्शन सहित विशुद्ध मनुस्मृति के समान किसी मत-मतान्तर का पुस्तक नहीं है। इनकी मत-मतान्तरों के ग्रन्थों से कोई तुलना नहीं है। यह कहानी किस्सों के ग्रन्थ न होकर ज्ञान के ग्रन्थ हैं। यही कारण था कि विदेशी लुटेरों व शासकों ने भारत में यहाँ के धार्मिक लोगों पर अमानवीय अत्याचार करने के साथ यहाँ के वेद एवं वेदादि ज्ञानयुक्त पुस्तकों को जला कर नष्ट किया। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि उनके अपने पास वेदों के समान ज्ञान की पुस्तकें नहीं थी। उन्हें ज्ञान से ईर्ष्या थी। उन्हें अपने मत और मत की पुस्तकों का प्रचार करना था। इस कारण उन्होंने हमारे देश के समुद्र के समान विशाल ज्ञान के भण्डार की पुस्तकों को नष्ट किया। जिन लोगों ने यह कार्य किये उनकी निन्दा ही की जा सकती है। हमारे देश से अनेक ग्रन्थों को संसार के अनेक देशों के लोग लेकर भी गये। आज विश्व के अनेक पुस्तकालयों में भारत से ले जायी गई पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। भारत के अनेक पुस्तकालयों में भी अनेक पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। हमें यह भी अनुभव होता है कि हमारे देश के लोग देश में उपलब्ध सभी प्राचीन पाण्डुलिपियों का अध्ययन कर उनका उपयोग नही ले पा रहे हैं। यह आश्चर्य की बात है। विश्व के यदि किसी अन्य देश में यह ग्रन्थ होते तो अवश्य ही वहाँ के लोग इनका अध्ययन कर इनसे उपयोगी ज्ञान प्राप्त करते और लाभान्वित होते।

सृष्टि के आरम्भ से महाभारत युद्ध तक के १.९६ वर्षों में भारत में ऋषि परम्परा प्रचलित रही। इस देश के आर्य राजाओं का विश्व के माण्डलिक राजाओं पर चक्रवर्ती राज्य हुआ करता था। इस कारण देश व विश्व में सर्वत्र वेदों का प्रचार रहा। महाभारत युद्ध के बाद देश में अव्यवस्था उत्पन्न हुई। वेदों का प्रचार-प्रसार व अनुसंधान आदि कार्य बाधित हुए। गुरुकुल प्रणाली में भी अवरोध उत्पन्न हुआ। इन कारणों से वेदाध्ययन का समुचित व्यवहार न होने से समाज में अनेक अन्धविश्वास उत्पन्न हुए। अग्निहोत्र यज्ञ का एक नाम अध्वर है। इसका अर्थ होता जिसमें किंचित हिंसा न की जाये। इसके विपरीत अविद्या व अज्ञान तथा प्रमाद के कारण यज्ञों में गौ, भेड़, अश्व आदि पशुओं के मांस की आहुतियाँ तक दी जाने लगी। यह कार्य अविद्या के कारण हुआ। इसका परिणाम ही कालान्तर में बौद्ध व जैन मतों का आविर्भाव हुआ। इन दोनों मतों में आवश्यकता से अधिक अहिंसा का समर्थन किया गया। जड़ मूर्तिपूजा भी इन्हीं मतों से देश में चली। कालान्तर में अवतारवाद की कल्पना, फलित ज्योतिष के मिथ्या सिद्धान्त, मृतक श्राद्ध, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन व वेद-श्रवण तक से वंचित किया गया। समाज से गुण, कर्म

व स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था को हटाकर जन्मना जाति व्यवस्था प्रचलित की गई। इन सब कारणों से देश में अविद्या फैलने से अन्धविश्वास उत्पन्न हुए और समाज असंगठित होकर अत्यन्त दुर्बल हो गया। इसी कारण से विदेशी विधर्मियों से पराजित होकर सनातन वैदिक धर्मियों का सब कुछ लूटा गया। आज भी आर्य हिन्दू जाति पर संकट के बादल छाये हुए हैं और हमारे धर्म के शीर्ष लोग सभी खतरों से असावधान एवं बेखबर हैं। यह सारी स्थिति इसलिये उत्पन्न हुई कि जिनको वेदों का अध्ययन व उनके सत्य अर्थों का अनुसंधान कर देश-विदेश में प्रचार करना था उन्होंने अपने कर्तव्यों की उपेक्षा की।

वैदिक धर्म में चार वर्णों को मान्यता प्रदान है। ब्राह्मण के कर्तव्य वेद पढ़ना व पढ़ाना, यज्ञ करना व करवाना तथा दान देना व दान लेना यह ६ कर्तव्य मुख्य होते थे व अब भी हैं। महाभारत के उत्तर काल में हमारे ब्राह्मण कुल के बन्धुओं ने अपने इन कर्तव्यों का ध्यान न रखा अपितु इसकी उपेक्षा की। इसी कारण से देश में अविद्या व अन्धविश्वासों की उत्पत्ति हुई। आठवीं शताब्दी में हम मुस्लिम आक्रमणकारियों व लुटेरों से त्रस्त होकर अपना स्वत्व खो बैठे और उसके सैकड़ों वर्ष बाद अंग्रेजों ने देश को गुलाम बनाया। सौभाग्य से ईसा की अट्ठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) ने एक सच्चे ब्राह्मण के रूप में वेद आदि विद्याओं का अध्ययन कर वेदों व ऋषियों के ग्रन्थों का प्रचार किया। उन्होंने अविद्या निवारक ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु ग्रन्थों सहित ऋग्वेद का आंशिक एवं सम्पूर्ण यजुर्वेद का संस्कृत-हिन्दी भाष्य प्रदान किया। उन्होंने देश के अनेक भागों में जाकर अपने उपदेशों के माध्यम से प्रचार किया। उनकी सन् १८८३ में मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने गुरुकुल एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान स्थापित कर देश से अशिक्षा व अविद्या को दूर करने का प्रशंसनीय कार्य किया। अन्धविश्वासों को दूर करने के लिये भी ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने महत्वपूर्ण योगदान किया।

ऋषि दयानन्द ने अज्ञान, असत्य एवं वेदविरुद्ध मूर्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, अवतारवाद की कल्पना एवं सभी अन्धविश्वासों पर प्रमाण पुरस्सर प्रहार किया जिससे लोगों को सत्य व असत्य का भेद समझ में आया। बुद्धिमान एवं सत्यप्रिय लोगों ने असत्य को छोड़कर सत्य को स्वीकार किया जिसका परिणाम देश में विद्या का प्रचार एवं अन्धविश्वासों में न्यूनता सहित देश की आजादी का सुफल प्राप्त हुआ। देश का विभाजन भी हमारे राजनीतिक नेताओं व धार्मिक नेताओं के अविवेकपूर्ण कार्यों का परिणाम था। आज पुनः देश में विभाजनकारी तत्व सक्रिय हैं और इनका प्रभाव बढ़ रहा है। हमारे कुछ राजनीतिक दल भी अपने सत्ता से जुड़े स्वार्थों के कारण विभाजनकारी तत्वों का गुप्त रीति से पोषण करते हैं। ऐसी स्थिति में आर्य व हिन्दू समाज को जागना होगा और संगठित होना होगा अन्यथा वैदिक मत सुरक्षित नहीं रह सकता। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह सनातन वैदिक धर्मी सभी बन्धुओं को सद्प्रेरणा करें जिससे वह अपने कर्तव्यों को जानकर संगठित होकर धर्म रक्षा में प्रवृत्त हों। धर्म रक्षा से ही देश की रक्षा होगी।

-मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चूक्खूवाला-२, देहरादून- २४८००१ (उत्तराखण्ड)

बस सिर्फ दो मिनट

आप इस शीर्षक को पढ़कर चौंक जरूर गये होंगे कि साहब, सिर्फ दो मिनट में क्या हो सकता है? हाँ, हो सकता है। आमतौर पर रेडियो या टीवी पर एक विज्ञापन में एक माँ अपने भूखे बच्चे को 'दो मिनट में मैगी तैयार हो जायेगी' कहकर आश्वासन जरूर देती है। इससे यह अच्छी तरह समझा जा सकता है कि हमारे जीवन में दो मिनट का बहुत महत्व है। कहावत मशहूर है कि 'लम्हों ने खता की है, सदियों ने सजा पाई'।

हमारी जिन्दगी में पल दो पल काफी मायने रखते हैं। कई बार दो मिनट स्टेशन पर देरी से पहुँचने से गाड़ी निकल जाती है और हम अपनी मंजिल पर ना पहुँच सकने के कारण सारी उम्र पछताते रहते हैं।

कई बार आपने सुना होगा कि किसी बड़े नेता के एक विशेष स्थान से गुजरने के दो मिनट के बाद भयानक विस्फोट हो जाता है तथा अनहोनी टल जाती है। आज हमारे जीवन में आपसी विवाद, टकराव, तनाव, मतभेद, निराशा तथा अवसाद देखने को मिलता है। हर आदमी आज केवल अपने आपको ठीक तथा दूसरे को गलत साबित करने में लगा है। यहीं से टकराव, स्वार्थ, मतभेद तथा ईर्ष्या फैलने लगती है। मेरा मानना है कि हमें दो मिनट शान्ति से अपने आपको ही समझाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर हम कोशिश करें तो अपने आपको तो सिर्फ दो मिनट में समझाकर समस्या को और गम्भीर होने से बचा सकते हैं। अगर हम सारी उम्र भी दूसरे को एक विशेष बात समझाने की कोशिश करें तो हम सफल नहीं हो सकते। लेकिन दो मिनट में अपने आपको जरूर समझा सकते हैं। क्रोध में आकर आदमी पागल हो जाता है और ना जाने क्या क्या कर जाता है। अगर हम क्रोध पर दो मिनट के लिए कंट्रोल करें तो बहुत सारे अनर्थ होने से बच जायेंगे। इसलिए हमें यह मानकर चलना चाहिए कि क्योंकि दूसरे व्यक्ति ने तो हमारी बात माननी नहीं। इससे अच्छा यही है कि दो मिनट ईमानदार प्रयास करके हम ही अपने आपको समझा लें। काफी हद तक संकट गंभीर होने से बच जायेंगे। हमारे यहाँ आजकल हत्या, हिंसा, बलात्कार, चोरी, डकैती, बेईमानी, राहजनी, फिरौती, कामचोरी, मिलावट, बड़ों के प्रति अवज्ञा, अपमान, अवहेलना, घरेलू हिंसा, यौन शोषण, भ्रष्टाचार आदि की घटनाएँ बढ़ रही हैं। बेशक उन्हें रोकने के लिए कानून भी बने हुए हैं, फिर भी उपर्युक्त बातों को लेकर अपराधों का ग्राफ ऊपर ही चढ़ रहा है। क्यों नहीं हम दो मिनट के लिए रुककर इस बात का विचार करते हैं कि इन पापों की सजा हमें आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों भुगतनी पड़ेगी। तब हमें कौन बचायेगा? आज हम जवान हैं, हमारे में सामर्थ्य है, सत्ता है, पहुँच है। हमें लगता है कि हम औरों के मुकाबले में ज्यादा ताकतवर होकर जो चाहे कर सकते हैं परन्तु क्या वो सब कुछ सदा हमारे पास रहेगा जिसको लेकर हम गलत काम करते हैं। इस पर सिर्फ दो मिनट का चिन्तन हमें आगे को मिलने वाली सजा से बचा सकता है।

In numbers

TOTAL NO. OF CRIMES REGISTERED

2016	2017	2018
1,08,991	1,19,858	1,13,951
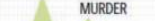
	2016	2017	2018
VIOLENT CRIMES	8,004	7,633	7,652
CRIMES AGAINST WOMEN	15,374	17,521	16,027
ECONOMIC OFFENCES	9,286	10,840	10,390
MURDER	1,046	805	786
CRIMES AGAINST SENIOR CITIZENS	1,382	1,308	1,062

VALUE OF PROPERTY STOLEN/RECOVERED (Rs CRORE)

	PROPERTY STOLEN	RECOVERED	RECOVERY %
2016	113.6	60.9	53.7
2017	120.4	62.3	51.7
2018	160.6	113.4	70.6
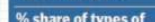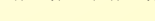
Missing children in 2018
Boys: 1,742
Girls: 2,668

Road accidents
2017: 22,484
2018: 22,230
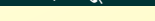
% share of types of prisoners in 2018
Convicts: 37.2
Undertrials: 57.5
Detenues: 5.3

(Source: NCRB)

राजनेताओं को भी चाहिए कि वे ठण्डे दिमाग के साथ दो मिनट बैठकर सोचें कि जिन मतदाताओं ने उन्हें विश्वास के साथ चुनकर कुर्सी पर बिठाया है उनके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करके अपने बोझ को वे क्यों नहीं उतारते। वरना मतदाता अगली बार उन्हें बेकार चीज समझकर कूड़ेदान में फेंक देंगे। आजकल के घोर कलियुग में 'थोथा चना, बाजे घना' के अनुरूप लोग धार्मिक प्रवृति के कुछ ज्यादा दिखाई देने लगे हैं। तीर्थयात्रा, जगरात्रा, उपवास, सत्संग, प्रवचन, गले में माला डालना, तिलक लगाना, भंडारे आयोजित करना आदि बातें कुछ ज्यादा ही देखने को मिल रही हैं। मेरा मानना है लोग अपने पापों को छुपाने तथा वाहवाही लूटने के लिए धर्म की आड़ लेने लगे हैं। वरना 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' भी हो सकता है। आदमी का सबसे बड़ा धर्म इधर-उधर भटकने के बदले में शान्त चित्त से दो मिनट उस परमात्मा को याद करना तथा धन्यवाद करना ही काफी है जिसने हमें पैदा किया तथा सुख से जीवन बिताने के साधन दिये। हमारा अपने तथा दूसरों के बारे में दो मिनट के लिए किया गया ईमानदार तथा सच्चे दिल से किया गया मूल्यांकन सारी स्थिति बदल सकता है। ठीक है कि हमें औरों की सहायता ईमानदारी से करनी चाहिए। लेकिन ईमानदारी, कर्तव्य परायणता, माँ बाप तथा बुजुर्गों की सेवा, कठिन परिश्रम, बच्चों तथा स्त्रियों के प्रति दया हमारे स्वभाव का हिस्सा होना चाहिए। इन सब बातों पर सिर्फ दो मिनट शान्त मन से विचार करके देखो, सचमुच कमाल हो जायेगा।

-प्रो. शामलाल कौशल
९७५-बी/२०, ग्रीन रोड़
रोहतक- १२४००१ (हरियाणा)

'एक मार्मिक अपील'

सादर नमस्ते जी

१ बजे गार्गी कन्या गुरुकुल के संचालक स्वामी चेतनदेव जी पर प्राणघातक हमला हुआ। हमलावरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गयी पर अब भी अपराधी गिरफ्त से बाहर हैं। कारण स्पष्ट है अपराधी दबंग हैं और पुलिस प्रशासन कार्यावाही करने से बच रहा है। गुरुकुलों पर इस प्रकार के अपराध पिछले कुछ वर्षों मे बढ़े हैं। संगठित होकर इनका प्रतिकार नही किया जाएगा तो इन गुरुकुलों के संचालन मे संघर्षरत संन्यासी आचार्यगणों का उत्साह कम हो जाएगा। अतः इस घड़ी में सभी को एकत्व का परिचय देना चाहिए। आपसे दो प्रकार का सहयोग अपेक्षित है।

१. कृपया अपनी संस्था की तरफ से लेटर पैड पर अपराधियों की गिरफ्तारी की माँग मुख्यमन्त्री, उत्तर प्रदेश से पत्र के माध्यम से निम्न पते पर मेल करना। Email:cmup@nic.in

२. अपना एक विडियो क्लिप १ से २ मिनट का भेजना जिसमें मुख्यमन्त्री उ.प्र., SP आलीगढ, SHO गौण्डा के नाम अपराधियों को गिरफ्तार करने की माँग की गयी हो व घटना की निन्दा हो। विडियो बनाकर (६४११८७६५६१) आचार्या गार्गी कन्या गुरूकुल पर कृपया प्रेषित करें ।

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

स्वामी दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का स्तम्भ बहुत ही आकर्षक एवं भव्य रूप में विस्तृत जानकारी प्रदान करने वाला है। निश्चित रूप से आम जनता इसके दर्शन करेगी एवं यहाँ लिखे विचारों को अपनायेगी तो सत्यार्थ प्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का प्रचार-प्रसार होगा। साथ ही साथ आर्य समाज का भी आम जनता में विस्तार होगा। यह सम्पूर्ण गैलेरी व सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ प्रचार प्रयोजन से आकर्षक व ज्ञानवर्द्धक स्थापित होगा। संस्था का प्रबन्धन बहुत ही सुनियोजित व प्रेरणादायक है। इसका अनुभव इस चित्रदीर्घा एवं समय-समय पर कार्यक्रम व उत्सव में आर्य समाज, उदयपुर के अधिकारियों के पूर्ण समर्पण भाव व निष्ठा से कार्य करते हैं उसे देखकर होता है। इसलिए इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि उदयपुर के सभी आर्य संगठित एवं प्रशंसनीय हैं।

मैं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर के कार्यों को देखकर यह निश्चित रूपेण कह सकता हूँ कि भविष्य में यह आर्य समाजियों के लिए ही नहीं अपितु अन्य लोगों के लिए भी तीर्थस्थल साबित होगा, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

– मोहनलाल राठौड़, पिपलियामण्डी

आम्राश्च सिक्ताः पितरश्च तृप्ताः
एका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा।।

कर्म के सन्दर्भ में महाराज का प्रतीकात्मक भाषा में एक विशेष संकेत यह भी है कि 'दोहरी खेती' या 'दोहरी सफाई' करनी चाहिए। खेती करते समय कृषक को यह समझना चाहिए कि एक तो मैं बाहर भूमि को जोत रहा हूँ। समय-समय पर खाद, पानी देता हूँ। फसल जब कुछ बढ़ने लगती है तो घास-पात से उसे बचाता हूँ। निराई-गुड़ाई करता हूँ। इस प्रकार निरन्तर फसल की रक्षा करता हुआ अन्त में अन्न-धान्य रूप में फल प्राप्त करता हूँ। इसके साथ मेरे अन्दर भी एक कृषि-कार्य चल रहा है। जैसा कि बुद्ध ने भी कहा है- 'हे भारद्वाज! यह जो आत्मा की खेती है, इसका बीज श्रद्धा है, वृष्टि तप है और फल प्रज्ञा है। शरीर का संयम, वाणी का संयम और आहार का संयम, ये क्षेत्र की मर्यादायें (बाड़) हैं। मनुष्य का पुरुषार्थ बैल है और उसका मन जोत है। जो इस प्रकार की खेती करता है, यह अमृत की फसल उत्पन्न करता है और दुःखों से छूट जाता है।'

महाराज का कहना है- जब भी इस अन्तःकरण रूपी भूमि में घृणा-काम-क्रोध-लोभ-मोह-ईर्ष्या-द्वेषादि स्वाग्रही (Self-asserting) भावरूपी खरपतवार सिर उठाने लगे तो पुरुषार्थरूपी कस्सी से तुरन्त उसे उखाड़ देना चाहिए। भक्तिरूपी जल से इसे सींचते रहना चाहिए तथा प्रेम रूपी खाद से इसकी शक्ति को निरन्तर बढ़ाते रहना चाहिए। इस प्रकार प्रयत्न विशेष से सम्पादित अन्तःकरण रूपी उर्वर भूमि में जो भी सेवारूपी कर्म के उत्तम-उत्तम बीज बोये जायेंगे, वे इस आन्तरिक कृषि करने वाले साधक को अनन्त समृद्धि से युक्त कर देंगे।

इसी प्रकार महाराज कहते हैं- जब तुम झाड़ू लगा रहे हो, उस समय अपने मन में ऐसे भाव जागरित करो कि इस सेवा रूपी झाड़ू के द्वारा मेरे अन्तःकरण में काम, क्रोध, लोभ, मोह, डाह, ईर्ष्या, निन्दा, तृष्णा इत्यादि के रूप में पड़ा हुआ गन्दगी का ढेर भी साफ हो रहा है। बाह्य शुद्धि के साथ मेरा मन भी स्वच्छ होता जा रहा है।

जब तुम गायें चरा रहे हो, उस समय सोचो कि कैसे ये गायें दिन-भर जंगल में चरती हुई दूध से भर जाती हैं और सायंकाल अपने स्वामी को तृप्त कर देती हैं। पर ये गायें उसी अवस्था में अच्छा दूध बनाकर लाती हैं जब इनका ग्वाला सावधान हो और सचेतन होकर इस बात की निगरानी रख रहा हो कि कहीं गायें मल, विष्ठा आदि अभक्ष्य पदार्थ तो नहीं खा रहीं, ध्यानपूर्वक उनको ऐसे स्थान से बचाता रहे। अच्छी आरोग्यदायक पुष्टिकारक हरी-हरी घास वाले स्थान में ही इन्हें ले जाता रहे। जो ग्वाला प्रमाद कर जाता है, सदा गायों के साथ पीछे-पीछे नहीं रहता, उसकी गायें स्वच्छन्द होकर एक तो मल-विष्ठा खाने लग जाती हैं, (यह पूर्णतः सत्य बात है)। दूसरा, पर-क्षेत्र में प्रवेश कर अनधिकृत शस्य खाने लगती हैं। अकस्मात् उसी समय वहाँ क्षेत्र स्वामी आ पहुँचता है तो इनकी पिटाई करने लगता है तथा गोस्वामी के पासआकर उपालम्भ भी देता है। इस प्रकार ग्वाले के प्रमाद करने से अनेकानेक अनर्थ उपस्थित हो जाते हैं।

इस सम्पूर्ण रूपक को अपने अन्दर भी घटाना चाहिए- हमारे

शरीर में इन्द्रियाँ ही गायें हैं। मन ग्वाला है। बुद्धि उस ग्वाले को अपार सहयोग देने वाली ज्ञान व बल का समुच्चय स्वरूप उसकी देवी है। आत्मा स्वामी है। इन्द्रिय रूपी गायों के द्वारा विषय रूपी चारा (घास) चरने के लिए संसार रूपी जंगल में प्रातः ही प्रस्थान कर दिया जाता है। बुद्धि रूपी देवी का यदि अपने पतिदेव मन के साथ पूर्ण सामंजस्य व पूर्ण प्रेम है तो मन अपनी देवी का ध्यान रखता हुआ सावधान हो अपने कर्त्तव्य-पालन में तत्पर रहता है। एक क्षण के लिए भी वह गाफिल नहीं होता कि इन्द्रिय रूपी गायें किसी खेत में घुसकर उत्पात मचाने लगें या कहीं इधर-उधर विष्ठा खाने लगें, जिसके परिणाम स्वरूप अपनी देवी जी को शर्मिन्दा होने पड़े। इस प्रकार बुद्धि व मन दोनों के सहयोग से इन्द्रिय रूपी गायें, आत्मा रूपी अपने स्वामी (मालिक) को उत्तम से उत्तम ज्ञान रूपी दूध पिलाती हैं तो आत्मा तृप्त हो जाता है।

महाराज कहते हैं- यदि तुम कोई भवन बना रहे हो तो विचार करो- जैसे एक के ऊपर एक ईंट रखते हुए बड़े परिश्रम से यह भवन बनकर तैयार होता है जिसके बन जाने पर हम आनन्दपूर्वक इसमें निवास करते हैं, उसी प्रकार इस जीवन रूपी भवन के निर्माण के लिए भी सतत् जागरूक रहते हुए पसीना बहाना पड़ेगा। एक-एक सद्विचार रूपी ईंट और सद्भावना रूपी सीमेण्ट से शनैः-शनैः कुशल शिल्पी की तरह धैर्य पूर्वक लगे रहकर इसके भव्य रूप को प्रकट करना होगा। तत्पश्चात् इसके ऊपर प्रेम व करुणा की मीनाकारी से इसके सौन्दर्य को निखारना होगा। इस प्रकार महाराज प्रत्येक बाह्य क्रिया व बाह्य निर्माण के साथ अन्तःक्रिया व अन्तर्निर्माण का उपदेश देते हैं। यही है महाराज की दोहरी खेती व दोहरी सफाई का भाव।

- स्वामी सोमानन्द जी के प्रवचन (साभार)

आर्यसमाज व आर्यवीर दल द्वारा कुन्हाड़ी में सेनेटाइजेशन कार्य

आर्य वीर दल कोटा के संभाग संचालक व आर्य समाज रामपुरा के मंत्री योगाचार्य रमेश गोस्वामी के नेतृत्व में आज वार्ड ५० की कॉलोनियों लक्ष्मण विहार हाउसिंग बोर्ड, कृष्णा विहार, चंचल विहार आदि मे सोडियम हाइपोक्लोराइट का छिड़काव किया गया ।

इस अवसर पर आर्य समाज के धर्माचार्य बिरधी चंद ने भी मशीन लेकर खुद इस कार्य की शुरूआत की।

योगाचार्य रमेश गोस्वामी ने बताया कि आर्य समाज द्वारा २८ मार्च २०२० से निरन्तर सेवा कार्य किये जा रहे हैं जिसमें जरूरतमंदों व दिहाड़ी मजदूरों को खाद्य सामग्री जिसमें ५ किलो आटा, १ किलो दाल, १ किलो चावल, ५०० ग्राम तेल, हल्दी, मिर्ची, धनिया व नमक आदि उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

साथ ही गायों हेतु चारा, पक्षियों हेतु दाना व आवारा कुत्तों हेतु रोटी आदि का प्रबन्ध भी संस्था द्वारा किया जा रहा है।

महर्षि दयानन्द

हे भारत वसुधा के गौरव! हे वेद-सुधा रस के प्रपात!
आक्रान्त रुढ़ि-रोगों से क्षत-विक्षत समाज हित मलय वात!
हे पावनतम वैदिक संस्कृति के नगपति जैसे महास्तंभ!
हे अंधकार से घिरे देश में नई ज्योति के समारम्भ!
कर दिया असंभव को संभव ऋषिवर तुमने बलिदानों से।
चेतनता के निर्झर फूटे, जड़ताओं की चट्टानों से।।

ये देश बना था धर्म-भीरू उज्ज्वल अतीत को बिसरा कर,
अज्ञान-तिमिर में भटक रहा था, पाखण्डों को अपना कर,
वरदान रूप तुम प्रकट हुए, लेकर वेदों का तत्व-ज्ञान,
दिनकर की किरणों-सा तुमने, प्रकटाया फिर स्वर्णिम विहान,
तुमने आत्मा के अमरदीप में, भरा स्नेह, बाती डाली।
सपनों के वन में बोल उठी, आशा की कोकिल मतवाली।।

जय! साहस के मार्तण्ड प्रखर, जय भवसागर के महासेतु!
जय! दिव्य चेतना के शिखरों पर, उड़ने वाले विजय-केतु!
जय! हे नरता के महाकाश, आर्य संस्कृति के कर्णधार!
आसेतु हिमाचल वेदध्वज, फहराने वाले ऋषि उदार!
जय हो ऋषियों के ओज-तेज, जय हो मुनियों के अमर ज्ञान।
जय ध्वस्त ग्रस्त मानवता के, प्रश्नों के उज्ज्वल समाधान।।

निज लक्ष्य-प्रप्ति के लिए, लगाई तुमने प्राणों की बाजी,
हो कर परास्त लौटा, जो आया पोप या कि मुल्ला-काजी,
जो बना प्राण-घातक उसको भी, विहँस क्षमा का दान दिया,
शरणागत दानव को तुमने, मानवता का वरदान दिया,
देवत्व मूर्ति तुम, दया और आनन्द लिए उर में अमन्द।
नित रहे देश-नैया के, कुशल खिवैया ऋषिवर दयानन्द।।

तुमने जो फूँका मंत्र, राष्ट्र के आँगन में साकार हुआ,
तुमने जिस मिट्टी के ढेले को, छुआ वही अंगार हुआ,
तुमने जो बोये बीज देश रत, है उनके ही बोने में,
वेदों का ध्वज लहराता है, दुनिया के कोने-कोने में,
वह अमिट रहेगा संसृति में, तुमने जो यश विस्तारा है।
पथ-दर्शक सबका बना आज, 'सत्यार्थ प्रकाश' तुम्हारा है।।

तुम दुःखी बाल-विधवाओं के, भोले मुख की मुस्कान बने,
अपनाकर दलित-अछूतों को, मानव से देव महान् बने,
जीवन के रीते पतझर में, तुम खिला गए मधुमास नया,
अपने साहसमय कृत्यों से, लिख गए एक इतिहास नया,
इस धरती का कण-कण गरिमा के, गीत तुम्हारे गाएगा।
ये देश तुम्हारे उपकारों से, उऋण नहीं हो पाएगा।।

कवि- महावीर प्रसाद 'मधुप'

फादर्स डे

पिता एक रिश्ता है तो जिम्मेदारी का नाम भी

माँ और पिता ये दोनों ही रिश्ते समाज में सर्वोपरि हैं। इन रिश्तों का कोई मोल नहीं है। ये सिर्फ एक शब्द भर नहीं हैं, बल्कि ऐसे रिश्ते हैं जिनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। दुनिया के तमाम देशों में इन रिश्तों के लिए अलग-अलग शब्द हो सकते हैं, पर भाव-पक्ष में साम्यता है। भारतीय संस्कृति में माता-पिता को देवता कहा गया है- मातृदेवो भव, पितृदेवो भव। श्रवण कुमार ने माता-पिता की सेवा में अपने कष्टों की जरा भी परवाह न की और अन्त में सेवा करते हुए प्राण त्याग दिये। देवव्रत भीष्म ने पिता की खुशी के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और विश्व प्रसिद्ध हो गये। माता-पिता की सेवा के तमाम दृष्टान्त हैं जिनका वर्णन नहीं किया जासकता। जो बच्चे अपने माता-पिता का आदर-सम्मान नहीं करते, वे जीवन में अपने लक्ष्य को कभी प्राप्त नहीं कर सकते।

फिलहाल यहाँ बात पिता की। भले ही पिता एक माँ की तरह

अपने कोख से बच्चे को जन्म न दे पाए, अपना दूध न पिला पाए, लेकिन सच तो यह है कि एक बच्चे के जीवन में पिता का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। हम सभी को बचपन में अनुशासनप्रियता व सख्ती के चलते पिता क्रूर नजर आते हैं। लेकिन जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है और हम जीवन की कठिन डगर पर चलने की तैयारी करने लगते हैं, हमें अनुभव होता है कि पिता की वो डाँट और सख्ती हमारे भले के लिए ही थी। पापा बाहर से जितने सख्त दिखाई पड़ते हैं, अन्दर से उतने ही कोमल हैं। वज्रादपि कठोर, बिल्कुल नारियल की तरह। उनकी हर एक सीख जब हमें अपनी मंजिल की ओर बढ़ने में मदद करती है, तब हमें मालूम पड़ता है कि पिता हमारे लिए कितने खास थे और हैं। कहते भी हैं कि माँ का प्यार नजर आता है पर पिता का प्यार नजर नहीं आता है क्योंकि पिता का प्यार इतना गहरा होता है कि उस प्यार को देखने के लिए नजरों की जरूरत नहीं होती है केवल दिल से ही पिता के प्यार को महसूस किया जा सकता है।

जिस घर में बच्चों की देख-रेख करने के लिए अगर पिता नहीं है तो उन मासूम बच्चों के सारे लाड़-प्यार, दुलार, पिता की छाँव सब कुछ अधूरा रह जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी के घर में माँ नहीं है तो बच्चों की देख-रेख ठीक से नहीं हो पाती। ठीक उसी तरह पिता के न होने पर भी बच्चों का वही हाल होता है। याद कीजिए बचपन के वो दिन जब माँ बड़े प्यार से आपके सिर पर हाथ फेरकर आप से प्यार करने का अहसास कराती होंगी पर आपके पिता बस आपकी तरफ देखकर केवल यही पूछते होंगे कि, 'मेरे बेटे को किसी चीज की जरूरत तो नहीं है न।' सोचिए जरा पिता

का यह सब पूछना, उनकी बातों और आँखों में कितना प्यार दिखाता है पर पिता कभी भी अपना प्यार जता नहीं पाता है। इस दुनिया जहान में बिना पिता के जीवनयापन करना बहुत मुश्किलों भरा काम है। बच्चों को हर उस जरूरत के लिए तरसना पड़ता है, जिसके वे हकदार होते हैं।

बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उँगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चाकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवा होने तक बाइक, कार, लैपटाप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक सभी माँगों को पिता पूरा करते रहते हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है कि अपनी जरूरतों को कम करके एवं अपनी अभिरुचियों को तिलांजलि देकर भी बच्चों के लिए पिता दिन-रात मेहनत करते हैं। अगर घर में पिता होते हैं तो तमाम जिम्मेदारियों से बच्चों को काफी हद तक मुक्ति मिल जाती है। फिर उन पर किसी तरह का कोई अतिरिक्त दबाव नहीं रहता। वो अपनी मर्जी से घूम-फिर सकते हैं। सारी दुनिया की फिक्र छोड़कर पिता के गोद में सिर रखकर आराम से सो सकते हैं।

पिता की उपस्थिति ही हमें काफी सुकून और आश्वस्ति देती है। हमें पिता से मिलता है एक सुरक्षा का वादा, एक प्यार का एहसास, जो बिना किसी शर्त से बँधा है। यह उम्मीद भी कि वो हमें कभी नहीं नकारेंगे। हमारी हर खुशी व हर जीत में ही नहीं बल्कि सबसे बुरे वक्त में भी संबल बनकर खड़े रहेंगे। पिता के लिए हमारी और परिवार की खुशी सर्वोपरि है, उनकी खुद की खुशी से भी ज्यादा। आज भी बचपन के वो दिन याद हैं कि कैसे हर साल पिताजी अपने कांधे पर बिठाकर रावण दहन दिखाने के लिए ले जाया करते थे। कितने सुनहरे दिन थे, जब पिताजी उंगली पकड़कर मेला घुमाया करते थे और हर जिद बड़ी आसानी से पूरी कर दिया करते थे। उनसे हम अपने दिल की हर छोटी बात भी बिना किसी हिचकिचाहट के साथ बाँट सकते थे।

जब बच्चे छोटे होते हैं तो उनसे अधिकतर यह पूछा जाता है कि उन्हें ज्यादा प्यार कौन करता है मम्मी या पापा तो अधिकांश बच्चे माँ का नाम ही लेते हैं। वो इसलिए क्योंकि वे माँ के साथ ही ज्यादा समय व्यतीत करते हैं और उन्हें पता ही नहीं होता है कि पिता का प्यार क्या होता है। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो माता-पिता दोनों के साथ एक जैसा समय

व्यतीत करते हैं और उनसे पूछे जाने पर वो बच्चे यही कहते हैं कि पिता ज्यादा प्यार करते हैं और साथ ही उन बच्चों को ज्यादा खुश देखा गया जो पिता के साथ ज्यादा समय व्यतीत करते हैं।

एक शोध के मुताबिक आज भी दुनिया भर में बच्चे सर्वप्रथम आदर्श के रूप में अपने पिता को ही देखते हैं। माँ उनकी पहली पाठशाला है तो पिता पहला आदर्श। वे अपने पिता से ही सीखते हैं और उनके जैसा ही बनना चाहते हैं। इसलिए जीवन में जितना माँ का महत्व होता है, उतना ही पिता का भी है। हमें यह नही भूलना चाहिए कि माता-पिता ने हमारे पालन-पोषण में कितने कष्ट सहे हैं। भूलकर भी कभी अपने माता-पिता का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। वे हमारे लिए सदैव आदरणीय हैं। उनका मान-सम्मान करना हमारा पुनीत कर्तव्य है।

पिता एक रिश्ता है तो जिम्मेदारी का भी नाम है। अपने बड़े होते बच्चों की परवरिश के साथ-साथ उनके सुनहरे भविष्य के लिए भी पिता सदैव सजग रहता है। इन सबके पीछे एक सुखद अहसास छिपा होता है कि बड़े होकर बच्चे उनका ध्यान रखेंगे और फिर वे अपने अधूरे सपने जी सकेंगे। पर कई बार ये सपने अधूरे ही रह जाते हैं और फिर शुरू होता है वह दौर, जब भागदौड़ भरी इस जिन्दगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। पाश्चात्य देशों में इसी को ध्यान में रखकर 'फादर्स डे' या 'पितृ दिवस' मनाने की परम्परा का आरम्भ हुआ।

'फादर्स डे' पिताओं के सम्मान में एक व्यापक रूप से मनाया जाने वाला पर्व है, जिसमें पितृत्व, पितृत्व-बंधन तथा समाज में पिताओं के प्रभाव को समारोह पूर्वक मनाया जाता है। इस

दिवस की शुरुआत बीसवीं सदी के प्रारम्भ में पिता धर्म तथा पुरुषों द्वारा परवरिश का सम्मान करने के लिये मातृ दिवस के पूरक उत्सव के रूप में हुई। यह हमारे पूर्वजों की स्मृति और उनके सम्मान में भी मनाया जाता है। पितृ दिवस को विश्व में विभिन्न तारीखों पर मनाते हैं- जिसमें उपहार देना, पिता के लिये विशेष भोज एवं पारिवारिक गतिविधियाँ शामिल हैं। विश्व के अधिकतर देशों में इसे जून के तीसरे रविवार को मनाया जाता है। कुछ देशों में यह अलग-अलग दिनों में मनाया जाता है।

फादर्स डे मनाने के पीछे भी कई दिलचस्प किस्से हैं। एक मान्यता के अनुसार वास्तव में यह सबसे पहले पश्चिम वर्जीनिया के फेयरमोंट में ५ जुलाई, १९०८ को मनाया गया था। ६ दिसम्बर, १९०७ को मोनोंगाह, पश्चिम वर्जीनिया में एक खान दुर्घटना में मारे गए २१० पिताओं के सम्मान में इस विशेष दिवस का आयोजन श्रीमती ग्रेस गोल्डन क्लेटन ने किया था। 'प्रथम फादर्स डे चर्च' आज भी सेन्ट्रल यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के नाम से फेयरमोंट में मौजूद है।

फिलहाल प्रचलित लोकप्रिय अवधारणा के अनुसार माना जाता है कि फादर्स डे सर्वप्रथम १९ जून १९१० को वाशिंगटन में मनाया गया। इसके पीछे भी एक रोचक कहानी है- सोनेरा डोड की। सोनेरा डोड जब नन्ही सी थीं, तभी उनकी माँ का देहान्त हो गया। पिता विलियम स्मार्ट ने सोनेरा के जीवन में माँ की कमी नहीं महसूस होने दी और उसे माँ का भी प्यार दिया। एक दिन यूँ ही सोनेरा के दिल में ख्याल आया कि आखिर एक दिन पिता के नाम क्यों नहीं हो सकता? इस तरह १९ जून १९१० को पहली बार फादर्स डे मनाया गया। १९२४ में अमेरिकी राष्ट्रपति कैल्विन कोली ने फादर्स डे पर अपनी सहमति दी। फिर १९६६ में राष्ट्रपति लिंडन जानसन ने जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे मनाने की आधिकारिक घोषणा की। १९७२ में अमेरिका में फादर्स डे पर स्थायी अवकाश घोषित हुआ। फिलहाल पूरे विश्व में जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे मनाया जाता है।

भारत में भी धीरे-धीरे इसका प्रचार-प्रसार बढ़ता जा रहा है। इसे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की बढ़ती भूमंडलीकरण की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में भी देखा जा सकता है और पिता के प्रति प्रेम के इजहार के परिप्रेक्ष्य में भी। पिता द्वारा अपने बच्चों के प्रति प्रेम का इजहार कई तरीकों से किया जाता है, पर बेटों-बेटियों द्वारा पिता के प्रति इजहार का यह दिवस अनूठा है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि स्त्री-शक्ति का एहसास करने हेतु तमाम त्यौहार और दिन आरम्भ हुए पर पितृसत्तात्मक समाज में फादर्स डे की कल्पना अजीब जरुर लगती है। पाश्चात्य देशों में जहाँ माता-पिता को 'ओल्ड एज हाउस' में शिफ्ट कर देने की परम्परा है, वहाँ पर फादर्स-डे का औचित्य समझ में आता है। पर भारत में कहीं इसकी आड़ में लोग अपने दायित्वों से छुटकारा तो नहीं चाहते हैं, इस पर भी विचार करने की जरुरत है। जरुरत फादर्स-डे की अच्छी बातों को अपनाने की है, न कि पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य में उसे अपनाने की जरुरत है।

कोई भी पिता अपने बच्चों से क्या चाहता है- प्यार का सच्चा इजहार, बच्चों का साथ, मान-सम्मान और यह आश्वस्ति कि बुजुर्ग होने पर बच्चे उनका भी पूरा ख्याल रखेंगे। बच्चों की हर सफलता के साथ पिता गौरवान्वित होता है। उन्हें लगता है कि जिन आदर्शों के लिए उन्होंने दिन-रात एक किया, बेटे-बेटियों ने उसे साकार किया। ऐसे में सिर्फ एक दिन 'फादर्स डे' मना कर अपने दायित्वों से इतिश्री नहीं किया जा सकता। माता-पिता ही दुनिया की सबसे गहरी छाया होते हैं, जिनके सहारे जीवन जीने का सौभाग्य हर किसी के बस में नहीं होता। इसलिए माता-पिता का आशीर्वाद लेकर सिर्फ एक दिन ही उन्हें याद ना करते हुए प्रतिदिन उन्हें नमन कर अपना जीवन सार्थक करना चाहिए।

- कृष्ण कुमार यादव
निदेशक डाक सेवाएँ

WHO statement:

Tobacco kills more than 8 million people globally every year. More than 7 million of these deaths are from direct tobacco use and around 1.2 million are due to non-smokers being exposed to second-hand smoke.

Tobacco smoking is a known risk factor for many respiratory infections and increases the severity of respiratory diseases. A review of studies by public health experts convened by WHO on 29 April 2020 found that smokers are more likely to develop severe disease with COVID-19, compared to non-smokers.

COVID-19 is an infectious disease that primarily attacks the lungs. Smoking impairs lung function making it harder for the body to fight off coronaviruses and other diseases. Tobacco is also a major risk factor for noncommunicable diseases like cardiovascular disease, cancer, respiratory disease and diabetes which put people with these conditions at higher risk for developing severe illness when affected by COVID-19 Available research suggests that smokers are at higher risk of developing severe disease and death.

WHO is constantly evaluating new research, including research that examines the link between tobacco use, nicotine use, and COVID-19 WHO urges researchers, scientists and the media to be cautious about amplifying unproven claims that tobacco or nicotine could reduce the risk of COVID.19 . There is currently insufficient information to confirm any link between tobacco or nicotine in the prevention or treatment of COVID-19 .

Nicotine replacement therapies, such as gum and patches are designed to help smokers quit tobacco. WHO recommends that smokers take immediate steps to quit by using proven methods such as toll-free quit lines, mobile
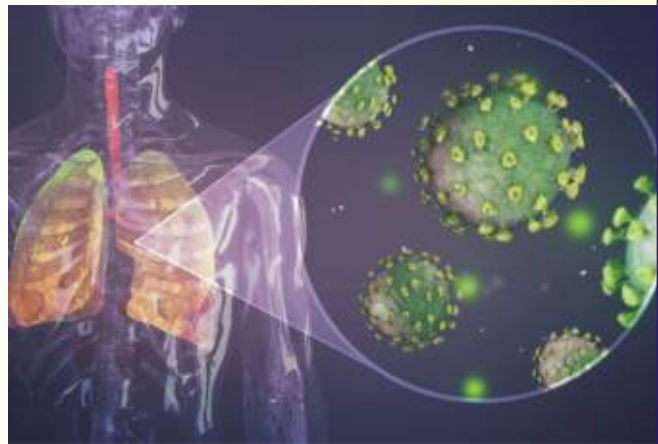
text-messaging programs, and nicotine replacement therapies.

Within 20 minutes of quitting, elevated heart rate and blood pressure drop. After 12 hours, the carbon monoxide level in the bloodstream drops to normal. Within 2-12 weeks, circulation improves and lung function increases. After 1-9 months, coughing and shortness of breath decrease.

WHO stresses the importance of ethically approved, high-quality, systematic research that will contribute to advancing individual and public health, emphasizing that promotion of unproven interventions could have a negative effect on health.

इतिहास से जो पन्ने हटा दिए गए हैं उन्हें वापस संकलित करना ही होगा क्यूंकि वही हिन्दू रेजिस्टेंस और शौर्य के प्रतीक हैं।

इतिहास में तो ये भी नहीं पढ़ाया गया है कि हल्दीघाटी युद्ध में जब महाराणा प्रताप ने कुंवर मानसिंह के हाथी पर प्रहार किया तो शाही फौज पांच छह कोस दूर तक भाग गई थी और अकबर के आने की अफवाह से पुनः युद्ध में सम्मिलित हुई है। ये वाकया अबुल फजल की पुस्तक अकबरनामा में दर्ज है।

क्या हल्दी घाटी अलग से एक युद्ध था.... या एक बड़े युद्ध की छोटी सी घटनाओं में से बस एक शुरूआती घटना?

महाराणा प्रताप को इतिहासकारों ने हल्दीघाटी तक ही सीमित करके मेवाड़ के इतिहास के साथ बहुत बड़ा अन्याय किया है। वास्तविकता में हल्दीघाटी का युद्ध, महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुए कई युद्धों की शुरुआत भर था। मुगल न तो प्रताप को पकड़ सके और न ही मेवाड़ पर आधिपत्य जमा सके। हल्दीघाटी के बाद क्या हुआ वो हम बताते हैं।

हल्दी घाटी के युद्ध के बाद महाराणा के पास सिर्फ ७००० सैनिक ही बचे थे और कुछ ही समय में मुगलों का कुम्भलगढ़, गोगुंदा, उदयपुर और आसपास के ठिकानों पर अधिकार हो गया था। उस स्थिति में महाराणा ने 'गुरिल्ला युद्ध' की योजना बनायी और मुगलों को कभी भी मेवाड़ में 'सेटल' नहीं होने दिया। महाराणा के शौर्य से विचलित अकबर ने उनको दबाने के लिए १५७६ में हुए हल्दीघाटी के बाद भी हर साल १५७७ से १५८२ के बीच एक एक लाख के सैन्यबल भेजे जो कि महाराणा को झुकाने में नाकामयाब रहे।

हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् महाराणा प्रताप के खजांची भामाशाह और उनके भाई ताराचंद, मालवा से दंड के पच्चीस लाख रुपये और दो हजार अशर्फियां लेकर हाजिर हुए। इस घटना के बाद महाराणा प्रताप ने भामाशाह का बहुत सम्मान किया और दिवेर पर हमले की योजना बनाई। भामाशाह ने जितना धन महाराणा को राज्य की सेवा के लिए दिया उस से २५ हजार सैनिकों को १२ साल तक रसद दी जा सकती थी। बस फिर क्या था..... महाराणा ने फिर से अपनी सेना संगठित करनी शुरू की और कुछ ही समय में ४०००० लड़ाकों की एक शक्तिशाली सेना तैयार हो गयी।

उसके बाद शुरू हुआ हल्दीघाटी युद्ध का दूसरा भाग जिसको इतिहास से एक षड्यंत्र के तहत या तो हटा दिया गया है या एकदम दरकिनार कर दिया गया है। इसे 'बैटल आफ दिवेर' कहा गया गया है।

बात सन् १५८२ की है, विजयादशमी का दिन था और महराणा ने अपनी नयी संगठित सेना के साथ मेवाड़ को वापस स्वतंत्र कराने का प्रण लिया। उसके बाद सेना को दो हिस्सों में विभाजित करके युद्ध का बिगुल फूंक दिया। एक टुकड़ी की कमान स्वंय महाराणा के हाथ थी दूसरी टुकड़ी का नेतृत्व उनके पुत्र अमर सिंह कर रहे थे।

कर्नल टाड ने भी अपनी किताब में हल्दीघाटी को Thermopylae of Mewar और दिवेर के युद्ध को राजस्थान का मैराथन बताया है। ये वही घटनाक्रम है जिसके इर्द-गिर्द आप फिल्म ३०० देख चुके हैं। कर्नल टाड ने भी महाराणा और उनकी सेना के शौर्य, तेज और देश के प्रति उनके अभिमान को स्पार्टन्स के तुल्य ही बताया है जो युद्ध भूमि में अपने से ४ गुना बड़ी सेना से यूँ ही टकरा जाते थे।

दिवेर का युद्ध बड़ा भीषण था, महाराणा प्रताप की सेना ने महाराजकुमार अमर सिंह के नेतृत्व में दिवेर थाने पर हमला किया। हजारों की संख्या में मुगल, राजपूती तलवारों, बरछों, भालों और कटारों से बींध दिए गए।

युद्ध में महाराजकुमार अमरसिंह ने सुलतान खान मुगल को बरछा मारा जो सुल्तान खान और उसके घोड़े को काटता हुआ निकल गया। उसी युद्ध में एक अन्य राजपूत की तलवार एक हाथी पर लगी और उसका पैर काट कर निकल गई।

महाराणा प्रताप ने बहलोलखान मुगल के सर पर वार किया और तलवार से उसे घोड़े समेत काट दिया। शौर्य की ये बानगी इतिहास में कहीं देखने को नहीं मिलती है। उसके बाद यह कहावत बनी कि मेवाड़ में सवार को एक ही वार में घोड़े समेत काट दिया जाता है। ये घटनायें मुगलों को भयभीत करने के लिए बहुत थी। बचे खुचे ३६००० मुगल सैनिकों ने महाराणा के सामने आत्मसमर्पण किया।

दिवेर के युद्ध ने मुगलों का मनोबल इस तरह तोड़ दिया कि जिसके परिणामस्वरुप मुगलों को मेवाड़ में बनाये अपने सारे ३६ थानों, ठिकानों को छोड़ के भागना पड़ा, यहाँ तक कि मुगल कुम्भलगढ़ का किला तक रातोंरात खाली कर भाग गए।

दिवेर के युद्ध के बाद प्रताप ने गोगुन्दा, कुम्भलगढ़, बस्सी, चावंड, जावर, मदारिया, मोही, माण्डलगढ़ जैसे महत्त्वपूर्ण ठिकानों पर कब्जा कर लिया। इसके बाद भी महाराणा और उनकी सेना ने अपना अभियान जारी रखते हुए सिर्फ चित्तौड़ को छोड़ के मेवाड़ के सारे ठिकाने दुर्ग वापस स्वतंत्र करा लिए।

अधिकांश मेवाड़ को पुनः कब्जाने के बाद महाराणा प्रताप ने आदेश निकाला कि अगर कोई एक बिस्वा जमीन भी खेती करके मुसलमानों को हासिल (टैक्स) देगा, उसका सर काट दिया जायेगा। इसके बाद मेवाड़ और आस पास के बचे खुचे शाही ठिकानों पर रसद पूरी सुरक्षा के साथ अजमेर से मगाई जाती थीं।

दिवेर का युद्ध न केवल महाराणा प्रताप बल्कि मुगलों के इतिहास में भी बहुत निर्णायक रहा। मुट्ठी भर राजपूतों ने पूरे भारतीय उपमहाद्वीप पर राज करने वाले मुगलों के हृदय में भय भर दिया। दिवेर के युद्ध ने मेवाड़ में अकबर की विजय के सिलसिले पर न सिर्फ विराम लगा दिया बल्कि मुगलों में ऐसे भय का संचार कर दिया कि अकबर के समय में मेवाड़ पर बड़े आक्रमण लगभग बंद हो गए।

इस घटना से क्रोधित अकबर ने हर साल लाखों सैनिकों के सैन्य बल अलग अलग सेनापतियों के नेतृत्व में मेवाड़ भेजने जारी रखे लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। अकबर खुद ६ महीने मेवाड़ पर चढ़ाई करने के मकसद से मेवाड़ के आस पास डेरा डाले रहा लेकिन ये महराणा द्वारा बहलोल खान को उसके घोड़े समेत आधा चीर देने का ही डर था कि वो सीधे तौर पे कभी मेवाड़ पे चढ़ाई करने नहीं आया।

ये इतिहास के वो पन्ने हैं जिनको दरबारी इतिहासकारों ने जानबूझ कर पाठ्यक्रम से गायब कर दिया है। जिन्हें अब वापस लाने का प्रयास किया जा रहा है। आप भी इस प्रयास में जुड़े।

– अन्तर्जाल से साभार

जीवन की सार्थकता विशाल हृदय से

भारत की गरिमा रही है कि उसने युद्ध के समय भी मानवता को स्थिर रखा है। ऐसा ही एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है।

पेशवा वाजीराव की सेनाओं ने हैदराबाद के निजाम की सेनाओं को चारों ओर से घेर लिया था। निजाम की सेनाओं का रसद पानी समाप्त होने को था। इधर ईद का अवसर आ गया। निजाम ने एक पत्र लिखकर भिजवाया। पत्र में लिखा था- हमारे पास अब जरा भी अनाज नहीं रहा है, कल ईद है क्या इस मौके पर हमारे सैनिकों को भूखा रखना चाहते हो?

पेशवा को जो पत्र लिखा, उन्होंने पढ़ा और अपने सेनापति को बुलाकर विचार-विमर्श किया। सेनापति ने कहा- अब शत्रु शिकंजे में है। इसलिये उसकी पराजय हर हालत में निश्चित है। हमें कुछ सहयोग करने की जरूरत नहीं है।

पेशवा ने सेनापति से कहा- आप ठीक कहते हैं निजाम हमारा शत्रु है और इस समय वह फंसा हुआ है हमारी विजय निश्चित है। उसकी हार भी निश्चित है किन्तु हम मनुष्य हैं। भूखी सेना पर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना शूरता या वीरता नहीं है। दुनिया को ज्ञात होना चाहिये कि महाराष्ट्र के वीर सैनिक समान बल वालों से लड़कर ही विजय प्राप्त करना चाहते हैं। वे क्रूर और क्षुद्र हृदय नहीं हैं जो भूखों पर आक्रमण करें, फिर ईद उनका पर्व है तो हमें उनका सहयोग अवश्य करना चाहिये। उन्होंने सेनापति को आदेश दिया कि ईद के पवित्र दिन से पूर्व ही निजाम के यहाँ अनाज भेजने की व्यवस्था की जाय।

तुरन्त अनाज से भरी बैलगाड़ियाँ पेशवा के सैनिकों ने निजाम के सैनिकों के लिये भेजना आरम्भ कर दिया।

पेशवा की इस गरिमा, विशाल हृदयता को देखकर निजाम आश्चर्यचकित था।

सत्यार्थ सौरभ का नवीन अंक

न्यास के सभी शुभेच्छु बंधुओं की सेवा में,

सादर नमन

कोरोना वायरस की भीषण विभीषिका के चलते देश में अभूतपूर्व स्थिति उत्पन्न होने से 23 मार्च से निरन्तर लॉक डाउन चल रहा है, आज इसे 29 मई तक बढा दिया है। इससे न्यास की समस्त गतिविधियों पर विराम लग गया है जो अतीव कष्टकारी एवं अनुभूति में यकायक शून्य के उत्पन्न होने जैसा है। गुलाब बाग के सभी प्रवेश द्वार सील कर दिए गए हैं।

ऐसे में नवलखा महल, उदयपुर में सुप्रसिद्ध 'आर्यावर्त चित्रदीर्घा' के अवलोकनार्थ जो सहस्रों पर्यटक आते थे वह क्रम अवरुद्ध हो गया है। इधर गत 99 अंकों से एक भी दिन देर से न निकलने वाला 'सत्यार्थ सौरभ' भी अप्रत्याशित रूप से विलंबित हो रहा है। अप्रैल में निकलने वाले शतांक का जब तक पोस्टल सेवायें पूर्णतः सुचारू रूप न चलने लग जायं तब तक सम्प्रेषण सम्भव न होगा। इस मध्य सत्यार्थ सौरभ का प्रस्तुत अंक ई-पत्रिका के रूप में आपको प्रेषित किया जा रहा है। अनेक आर्यजन डिजिटल माध्यम से उतने परिचित नहीं हैं। अतः आपसे प्रार्थना है कि हम तो अधिकाधिक आर्यजनों को यह अंक भेजेंगे ही पर, आप भी अपने परिचितों को फॉरवर्ड कर सहयोग प्रदान करें। उचित समझें तो इस अंक के सम्पादकीय पर अपनी सम्मति भेजने का श्रम करें।

इस सबके लिए हमें खेद है तथा हम क्षमाप्रार्थी हैं। असाधारण परिस्थितियों के चलते आशा है आप सभी अपनी आत्मीयता हमारे प्रति बनाये रखते हुए क्षमा करेंगे। इसी आशा और विश्वास के साथ।

– भवानी दास आर्य, प्रबन्ध सम्पादक

स्वास्थ्य क्या है?

– गतांक से आगे ....

१. **आध्यात्मिक स्वास्थ्य–** समृद्ध आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त किये बिना व्यक्ति की जीवन यात्रा अधूरी सिद्ध होगी। भौतिक वस्तुओं का चाहें कितना भी ढेर लगा लें यदि आध्यात्मिक ज्ञान का अभाव है तो सदा बेचैन और अशांत रहेगा। बाहरी वस्तुओं से सुख प्राप्ति की मृगमरीचिका में फंसकर आज का मानव हताश और परेशान हो रहा है।

हमें यह समझना होगा कि वस्तुओं का खालीपन नहीं भरता। क्योंकि वस्तुएँ बाहर हैं और खालीपन भीतर का है।

आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति यह बात अच्छी तरह जानता है। ऐसे व्यक्ति की सबसे बड़ी निशानी यह है कि वह सुख दुःख दोनों ही स्थिति में अविचलित रहते हुए समभाव बनाये रखता है। वह किसी से अपनी तुलना करके परेशान नहीं होता। किसी से किसी भी तरह की प्रतिस्पर्धा की आवश्यकता नहीं है। आप स्वयं में जैसे भी हैं- हैं। खुद को स्वीकार करिए।

स्वयं को जानना और जीवन के अर्थ और उद्देश्य की तलाश हमें आध्यात्मिकता की ओर उन्मुख करती है, इसके ज्ञान से हमारा जीवन समृद्ध बनता है। समृद्ध आध्यात्मिक स्वास्थ्य को उपलब्ध व्यक्ति के जीवन में शांति और आनन्द होता है। इसका कारण ऐसे व्यक्ति का यह बोध होता है कि मैं शरीर नहीं बल्कि अनुभव करने वाली आत्मा हूँ और मेरे जीवन का लक्ष्य भक्ति अथवा ज्ञान द्वारा विकारों की धूल को हटाकर भगवती को उपलब्ध होना है।

२. **सामाजिक स्वास्थ्य–** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक स्वास्थ्य में दूसरों के साथ पारस्परिक सम्बन्धों को संतोषजनक बनाने की आप की क्षमता शामिल है। यदि कोई व्यक्ति लोगों से अपने को ठीक तरह से कनेक्ट नहीं कर पाता तो यह उसके लिए दुःख का कारण बनता है।

३. **नियम** के अनुसार बुरे व्यवहार की प्रतिक्रिया बुरी और अच्छे व्यवहार की प्रतिक्रिया अच्छी आना स्वाभाविक है। व्यक्ति का सामाजिक स्वास्थ्य उसकी खबर देता है कि वह लोगों के बारे में क्या सोचता है और उनकी खुशहाली की कितनी कामना करता है। स्वयं के भावनात्मक सामाजिक स्वास्थ्य को अच्छा बनाने के लिए लोगों के प्रति प्रेम भाव रखना आवश्यक है। इसके पश्चात् लोगों से सम्बन्धों को बढ़ाना और सामाजिक कल्याण की भावना से कार्य करना शामिल होगा। अपने झूठे अहंकार को खत्म करके सामाजिक जीवन में सफल हुआ जा सकता है।

४. **बौद्धिक स्वास्थ्य–** बौद्धिक स्वास्थ्य से सम्पन्न व्यक्ति किसी भी समस्या को दूर करने में विभिन्न पहलुओं से विचार करके समाधान प्रस्तुत कर सकता है। वह किसी घटना की समीक्षा करके, अपने आसपास की समस्याओं और अप्रत्याशित बाधाओं को अनुकूल करने के लिए रचनात्मक तरीके सुझाकर समाज और स्वयं का विकास कर सकता है।

जो लोग बौद्धिक स्वास्थ्य से पूर्ण हैं वे खुला दिमाग रखते हैं और एक अलग दृष्टिकोण से मुद्दों को देखने और हल करने की क्षमता प्रदर्शित करते हैं। बौद्धिक स्वास्थ्य को बढ़ाने वाले कारकों में व्यक्ति की पढ़ने में रुचि प्रथम है। किताबों में विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है, जो जीवन पथ में समस्याओं का निदान करते हुए आगे बढ़ने में मदद करता है। दूसरा उपाय है बौद्धिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों से मेल मिलाप और उनसे बातचीत।

खुश कैसे रहें–

बौद्धिक स्वास्थ्य से सम्पन्न व्यक्ति के लक्षण हैं- उसमें आत्म संयम होने के कारण वह चिंता, भय, क्रोध, लोभ, जलन और अपराधबोध जैसी भावनाओं के वश में नहीं होता।

दूसरा लक्षण है विनम्र व्यवहार के साथ दूसरे के दृष्टिकोण का सम्मान करना, जिसमें अपनी आलोचना को स्वीकार करने का भाव भी शामिल है।

तीसरा लक्षण ऐसे लोग उच्च भावनात्मक स्थिति में होने के कारण आसानी से व्यथित नहीं होते। ये लोग जरूरत पड़ने पर अपने अहम् को त्याग और समझौता करने में पीछे नहीं हटते।

अच्छे स्वास्थ्य की आवश्यकता किसी एक विशेष धर्म या सम्प्रदाय तक की बात न होकर समस्त मानव जाति के सम्पूर्ण कल्याण की बात है। दुर्भाग्य से अधिकांश लोग अच्छे स्वास्थ्य के महत्व को नहीं समझते और केवल शारीरिक स्वास्थ्य को ही सबकुछ समझते हैं। यदि हमें अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना है तो स्वास्थ्य के अन्य आयामों की तरफ ध्यान देना आवश्यक है। जिनकी चर्चा ऊपर की गई है। उनकी उपेक्षा से जीवन की पूर्णता सम्भव नहीं है।

समाचार

आर्य समाज हापुड़ ने बांटी 'आयुर्वेदिक औषधि किट'

हापुड़, आर्य समाज ने कोरोना योद्धाओं को आयुर्वेदिक औषधियों की किट आज प्रशासनिक विभाग व पुलिस विभाग में वितरित की। अतरपुरा चौपले पर कोतवाल श्री राजेश कुमार व अन्य पुलिस इंस्पेक्टर, सिपाहियों को वितरित की तथा थाने में कोतवाल श्री अवनीश गौतम अन्य अधिकारियों व स्टाफ को औषधि किट दी। पुलिस लाइन तथा महिला थाने में भी वितरण किया गया।

अपर जिलाधिकारी श्री जयनाथ यादव जी को आयुर्वेदिक किट भेंट की गयीं। किट में च्यवनप्राश, तुलसी अर्क, कफ सिरप, पंचतत्व चूर्ण, नीम सोप, सेनिटाइजर आदि रखे गये थे।

आर्य समाज के प्रधान, नरेन्द्र आर्य, मंत्री अनुपम आर्य, डॉ. कमलकांत मुद्‍गल, डॉ. अभिषेक मुद्‍गल, मुकेश शर्मा, सुन्दर कुमार आर्य, अनिल कसेरे ने किट वितरण में सहयोग किया। पूर्व प्रधान आनन्द आर्य ने बताया कि यह किट कोरोना योद्धाओं में शरीर की प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने में बहुत उपयोगी रहेगा। आगे भी अन्य कोरोना योद्धाओं को यह किट वितरित की जाएंगी।

पशुआहार खिला आर्यसमाज ने की गौसेवा

आर्यसमाज, कोटा में पिछले कई दिनों से कोरोना वायरस जनित संकटकाल में प्राणीमात्र के कल्याण की कामना से निरन्तर सेवा के कार्य किए जा रहे हैं। अपने इन्हीं सेवा कार्यों के अन्तर्गत भूख से

व्याकुल गायों के झुण्डों को ढूंढ आर्यसमाज, कोटा के कार्यकर्त्ता खलचुरी पशुआहार खिला रहे हैं।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा और दिल्ली आर्यसभा की प्रेरणा से आर्यसमाज के प्रान्तीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में युवा कार्यकर्त्ता लॉकडाउन में जरूरतमन्दों की सेवा का कार्य कर रहे हैं।

श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि लॉकडाउन के कारण केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशुओं को भी कठिनाइयों और भूख प्यास का सामना करना पड़ रहा है इसी कारण आज आर्यसमाज के आर्य युवा कार्यकर्त्ता विनोद सिंह कुशवाह के नेतृत्व में कमल महावर, धनराज डोडिया, तुलसी राम प्रजापति, गौरव पालीवाल तथा मुकेश वर्मा ने गैपरनाथ रोड पर भूख से इधर-उधर भटकती हुई गायों को पशुआहार खलचुरी चापड खिलाकर गौ सेवा की। वहाँ उपस्थित स्थानीय नागरिक रामकुमार शर्मा ने आर्यसमाज के गौसेवा के इस कार्य की प्रशंसा की।

इस बारे में अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि गायों के लिए खलचुरी पशुआहार लक्ष्मी ट्रेडिंग कम्पनी के किशोरी लाल गुलाटी तथा ओमप्रकाश गुलाटी द्वारा आर्यसमाज को उपलब्ध कराया गया है।

- अर्जुनदेव चड्ढा

उदयपुर में 'घर-घर हवन, हर घर हवन' का बृहद् अनुष्ठान

उदयपुर के आर्य समाज के सभी सदस्यों द्वारा अपने-अपने घरों में

कोराना वायरस को हराने के उद्देश्य से बृहद् स्तर पर यज्ञ के अनुष्ठान रविवार प्रातः साढ़े नौ बजे एक साथ आहूत किए गए। आर्य समाज हिरण मगरी के मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि 'घर-घर हवन, हर घर हवन' के आह्वान के साथ आर्यसमाज का यह आयोजन पर्यावरण शुद्धि व रोगाणुओं को नष्ट करने के उद्देश्य से किया गया। देश-विदेश के सभी आर्य समाज केन्द्रों, आर्य समाज के सदस्यों, गुरुकुल व आश्रमों में वेद मंत्रों के उच्चारण एवं औषधीय गुणों से युक्त हवन सामग्री से यज्ञ में आहुति के साथ ईश्वर से इस वैश्विक महामारी से मुक्ति हेतु प्रार्थना की गई। श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, आर्य समाज उदयपुर के श्री प्रकाश चन्द्र श्रीमाली, श्री संजय शांडिल्य, श्रीमती मनोरमा गुप्ता, श्रीमती ललिता मेहरा सहित उदयपुर स्थित सभी आर्य समाज के सदस्यों ने अपने घरों में यज्ञ कर वैदिक काल से चली आ रही घर-घर यज्ञ की परम्परा को पुनर्जीवित किया।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा

आर्यसमाज, उदयपुर द्वारा वैदिक पद्धति से विवाह सम्पन्न

आर्य समाज, हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा वैदिक पद्धति से शासकीय प्रावधानों के अनुसार विवाह सम्पन्न करवाया गया। आर्य समाज हिरण मगरी के मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि उदयपुर की दुल्हन कृति भंसाली व कोटा से आए दूल्हा श्री जतिन जैन द्वारा दाम्पत्य सूत्र में बंधने से पूर्व दोनों पक्षों द्वारा अपने शासकीय क्षेत्र से सभी औपचारिकताओं को पूर्ण कर पूर्वानुमति ली गई। आर्य समाज के प्रधान श्री भंवर लाल आर्य एवं वार्ड पार्षद श्रीमती विद्या भावसार ने वर-वधू को विवाह प्रमाण-पत्र व वैदिक साहित्य भेंट कर आशीर्वाद प्रदान किया। विवाह समारोह की साक्षी रहीं क्षेत्र की पार्षद श्रीमती विद्या भावसार ने कहा कि अब आडम्बर, भीड़ व दिखावे से रहित इस प्रकार से वैदिक विवाह का समय आ गया है। वधू के मामा एवं लॉयन्स क्लब गवर्नर श्री अनिल नाहर ने आदर्श रूप में सम्पन्न इस विवाह को मितव्ययता, समय की बचत व सादगी का अनुकरणीय उदाहरण बताया। आर्य समाज हिरण मगरी के आवासीय पुरोहित श्री राम दयाल जी मेहरा ने सप्तपदी, लाजा होम, शिलारोहण आदि के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वैदिक विवाह सम्पन्न करवाया।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा

सेवा-त्याग के आदर्श हैं रैड क्रास संस्थापक

स्विट्जरलैंड के हैडन कस्बे के निवासियों की नजर १८८७ में सड़कों पर घूमते एक वृद्ध पर पड़ी। आश्चर्य, ये दयनीय हालत में रैड क्रास संस्थापक हेनरी डयूनैन्ट हैं। लोगों ने सम्मानपूर्वक उनकी देखरेख की डयूनैन्ट ने जीवन के अन्तिम १८ वर्ष यहीं अस्पताल में व्यतीत किये। डयूनैन्ट ने ही कहा था- 'विध्वंस के नये भयानक उपाय प्रतिदिन खोजे जा रहे हैं अन्वेषकों को पुरस्कार दिया जाता है।' इन्हें १६०१ में प्रथम नोबल शान्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।

आल्प्स आरोहण को १८६५ में आये पत्रकार ने उनका साक्षात्कार प्रकाशित किया। विश्व को आश्चर्य था कि मानवता का प्रकाश पुंज जीवित होते हुए भी २८ वर्ष की गुमनामी में रहा। यूरोप सहित संसार के लोगों ने सहायता को हाथ बढ़ाये। डयूनैन्ट ने विनम्रता से कहा मेरी आवश्यकताए हैडन निवासी पूरा करते हैं, कुछ नहीं चाहिए।

५००० वर्षों में ऋषि दयानन्द के पश्चात् त्याग, तपस्या, परोपकार, सहनशीलता के महामानव हेनरी डयूनैन्ट।

८ मई जन्मदिन रैड क्रास डे पर शत-शत नमन।

- तारा सिंह (६७१६११०८०१)

आर्य समाज हिरण मगरी द्वारा ५१००० रुपए का सहयोग

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से पी एम केयर्स राहत कोष हेतु उपजिला कलेक्टर श्री ओ. पी. बुनकर को ५१००० रुपए की सहायता राशि का चेक सौंपा गया। इस अवसर पर समाज के प्रधान श्री भंवर लाल आर्य, मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा व वार्ड पार्षद श्रीमती विद्या भावसार उपस्थित थे। समाज मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि आर्य समाज हिरण मगरी की ओर से सेक्टर-४ क्षेत्र में प्रतिदिन आयुर्वेदिक काढ़ा, मास्क व सेनेटाइजर्स भी प्रातः ८ से १० बजे तक बांटे जा रहे हैं। पर्यावरण शुद्धि हेतु प्रतिदिन प्रातः ७ बजे से ८ बजे तक समाज पुरोहित श्री राम दयाल आर्य द्वारा यज्ञ भी किया जा रहा है।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा

सफाई कर्मचारी कर्मयोद्धा का किया स्वागत

आर्यसमाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर के प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि नगर निगम वार्ड सं.६२ के प्रभारी श्री रतन लाल घारु, मुकेश जावा जिम्मेदार, तेजपाल, हेमजी उजास का ओम का दुपट्टा पहनाकर मंत्री नरेन्द्र आर्य ने स्वागत किया साथ ही सभी सफाई कर्मचारियों को सोहन सिंह, बलवीर भाटी ने माला पहना कर कर्मयोद्धा का हौंसला बुलन्द किया। इस अवसर पर सच्चिदानन्द भाटी, नरेश, हरिश, भाऊ, नवीता आदि उपस्थित थे।

- कैलाश चन्द्र आर्य

शोक संवेदना

टंकारा ट्रस्ट के प्राण और मंत्री श्रद्धेय रामनाथ जी सहगल का निधन

अत्यन्त दुःखद और पीड़ादायक। आर्य जगत् की ऐसी क्षति जिसकी भरपाई सम्भव नहीं। हम सभी के अत्यन्त पूज्य, जब तक श्वांस रही तब तक अपनी समस्त क्षमताओं के साथ आर्यसमाज के इतिहास में एक सम्पूर्ण युग के पर्याय बन चुके, कर्मयोगी, महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्मस्थली के अद्वितीय विकास के चितेरे, विश्वपटल पर आर्यों की श्रद्धा व आस्था के इस केन्द्र की ख्याति को प्रसरित करने वाले, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री तथा डीएवी एवं आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रधान, माँ भारती के लाडले सपूत पूज्य रामनाथ जी सहगल अब हमारे मध्य नहीं रहे। यद्यपि यहाँ यह कहना आवश्यक है कि समय की रेत पर उनके द्वारा अपने यशरूपी शरीर के माध्यम से जो पदचिह हमारे मार्गदर्शन के लिए छोड़े गए हैं, उनका पार्थिव शरीर ही हमसे विलग हुआ है, वे स्वयं नहीं। वे तो सदैव एक शाश्वत प्रेरणा के रूप में प्रशस्त पथ पर चलने हेतु हमें दिशा निर्देश देते रहेंगे। पर वियोगजन्य पीड़ा का शमन तो विज्ञ और तत्वदर्शी के रूप में हमें, भाई अजय जी और समस्त परिवारीजनों को स्वयं करना ही पड़ेगा, क्योंकि विधाता की इस अटल व्यवस्था के समक्ष सिर झुका देने के सिवाय हमारे पास कोई चारा नहीं है।

पूज्य रामनाथ जी ने 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्' की वेदाज्ञा का अक्षरशः पालन करते हुए दिव्य गुणों और क्षमताओं से युक्त भाई अजय जी का अपने ही स्वरूप में निर्माण कर, उन्हें माँ आर्यसमाज को प्रदान कर, पितृ ऋण से उऋण होने का शानदार उदाहरण जहाँ आर्यों के समक्ष उपस्थित किया वहीं टंकारा ट्रस्ट के कार्यों को उनके जीवनकाल में ही सफलतापूर्वक नए आयाम देने वाले पुत्र अजय जी के कार्यों को देख-देख वे असीम सन्तोष का अनुभव करते ही होंगे, और इस नश्वर संसार को तजते समय भी इसी कारण वे परम शान्ति का अनुभव भी कर रहे होंगे जो अन्यथा दुर्लभ ही है।

सहगल साहब ने भाई अजय जी के रूप में जो सौगात आर्यसमाज को दी है, उससे उनकी कमी कुछ हद तक अवश्य पूर्ण होगी।

हम श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी न्यासीगण आर्य जगत् की इस विभूति को चिर विदा देते हुए परमेश प्रभु के श्री चरणों में यही विनय करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और शोकमग्न परिवार के सभी सदस्यों को इस वियोगजन्य पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करें। ओम शांतिःशान्तिःशान्तिः।

- अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, नवलखा महल, उदयपुर

सत्यार्थ-पीयूष

ईश्वर न्यायकारी और दयालु है

ईश्वर सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी है। जिस प्रकार एक राज्य को तभी अच्छा कहा जा सकता है जब वहाँ की न्याय व्यवस्था पक्षपातरहित व उत्तम हो उसी प्रकार सृष्टि के स्वामी का भी पक्षपातशून्य न्यायाधीश होना अनिवार्य है और ईश्वर ऐसा ही है। लौकिक न्यायाधीश को न्याय करने में निष्पक्ष होने पर भी अल्पज्ञ होने के कारण दूसरों की साक्षी पर निर्भर होना पड़ता है अतः अगर साक्षीगण मिथ्या कथन करें तो न्याय दूषित हो सकता है।

ईश्वर न्यायाधीश हैं-

इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम्॥ - ऋग्वेद १/२३/२२

मनुष्य के द्वारा जैसा पाप और पुण्य किया जाता है, वैसा ही ईश्वर की व्यवस्था से उन्हें (फल) प्राप्त होता है, यह निश्चय है।

परन्तु ईश्वर सर्वज्ञ है। वह जीवों के कर्म तो क्या, कर्म का विचार भी जैसा मन में उठता है वैसा ही उसी क्षण जान जाता है। अतएव उसे किसी अन्य साक्षी की आवश्यकता नहीं। सबके कर्मों का, विचारों का वह स्वयं साक्षी है अतः उसका न्याय कभी दूषित नहीं होता। लौकिक न्यायधीश राग, द्वेष, लोभ, मोह, भय के वशवर्ती हो दुष्ट न्याय में प्रवृत्त हो सकता है परन्तु ईश्वर में उपर्युक्त दोषों का अभाव होने से सदैव निष्पक्षता तथा तटस्थता रहती है। उसके दरबार में न किसी की सिफारिश चलती है न वे किसी की मित्र की मित्रता या भक्त की भक्ति के वशीभूत हो, उन पर विशेष अनुग्रह करते हैं, तो उस सर्वशक्तिमान् परमेश्वर के किसी से भयभीत होकर न्याय से विरत रहने का तो प्रश्न ही नहीं है।

लोक में यह भी होता है कि सजा प्राप्त अपराधी दण्ड से बचने के लिए राजा के राज्य से ही बाहर भाग जाता है अतएव न्याय अपूर्ण रह जाता है। परन्तु चराचर के स्वामी के राज्य से कोई कहाँ भागेगा? अतएव ईश्वर पूर्ण न्यायकारी है। जीवों के शुभाशुभ कर्मों का अवश्यमेव फल देता है। यह उसका अटल विधान है तथा सम्पूर्ण सृष्टि में कोई ऐसी सत्ता नहीं जो उसके दण्ड से बच सके क्योंकि वह सबसे बलशाली है।

कुछ चिन्तकों की सोच है कि जीव अपने कर्मों का फल स्वयं भोग लेता है उसके लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं। परन्तु यह विचार मिथ्या है। जीव अल्पज्ञ होने से न तो अपने कर्मों को यथार्थ स्वरूप में जानता है न सीमित शक्ति से स्वयं के कर्मों का लेखा जोखा रख सकता है। और सबसे बड़ी बात अपने अशुभ कर्मों का दुःख रूप फल कोई नहीं भोगना चाहता। अपराध करने पर भी अपराधी स्वयं बन्दीगृह में जाकर नहीं बैठ जाता। उसे राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत बलात् कैद में रखा जाता है। अतएव ध्रुव सत्य है कि असंख्य प्राणियों के शुभाशुभ कर्मों का फल पूर्ण न्यायकारी, सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान् परमात्मा द्वारा दिया जाता है।

जहाँ तक ईश्वर की दयालुता का प्रश्न है वह सर्वत्र प्रतिक्षण दृष्टिगोचर हो रही है। उसका वर्णन असम्भव है। उस परम कारुणिक प्रभो ने जीवों (भोक्ता) से पूर्व भोग्य सामग्री का निर्माण कर बिना किसी भेदभाव के, बिना किसी शुल्क के प्राणीमात्र को प्रदान की है। लौकिक माता-पितादि कृपालुगण तो अपनी दया के बदले कुछ न कुछ चाहते भी हैं पर वह परमात्मा बदले में कुछ भी नहीं चाहता। सारांश कि ईश्वर की दयालुता के बारे में मनुष्य एक जन्म ही नहीं जन्म-जन्मान्तर में भी लिखता चला जावे तो भी वर्णन कर सकना सम्भव नहीं है।

अनेक लोग मानते हैं कि ईश्वर अगर अपने यथावत् न्याय करने के नियम पर पूर्ण अटल रहे तो उसे फिर दयालु कैसे कहा जा सकता है? क्योंकि गलती करने पर भी क्षमा कर देना ही उनकी दृष्टि में दया है। परन्तु यह उनकी भूल है। विचार करें कि लौकिक न्याय में भी अगर न्यायाधीश द्वारा इस प्रकार न्याय का रास्ता छोड़ अपराधियों को दण्ड न देकर छोड़ दिया जावे तो क्या संसार में अराजकता फैल कर, अपराधियों के हौंसले बढ़कर और भी ज्यादा अपराध संख्या बढ़कर मनुष्यों को दुःख पहुँचकर उनका जीवन नर्कवत् नहीं हो जावेगा? क्या यही दया होगी जिससे सम्पूर्ण प्रजा का धन, जीवन, अस्मिता असुरक्षित हो जाय? हम अपने ऊपर रखकर विचार करें। हमारे आत्मीय का कातिल, निर्मम हत्यारा न्यायाधीश की दया का पात्र हो, मूँछों पर ताव देता खुले आम घूमता रहे क्या हम ऐसे न्यायाधीश को दयालु मानेंगे? कदापि नहीं। फिर हम ईश्वर से न्याय पक्ष को छोड़ तथाकथित रूप से दयालु होने की आशा क्यों करते हैं?

- अशोक आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 May+June-2020 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर